सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

हिंदी गृह पत्रिका
अप्रैल – सितम्बर 2022

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,
केरल, तिरुवनंतपुरम

सत्यमेव जयते

सविता

हिंदी ई-गृह पत्रिका

अप्रैल 2022 – सितम्बर 2022

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

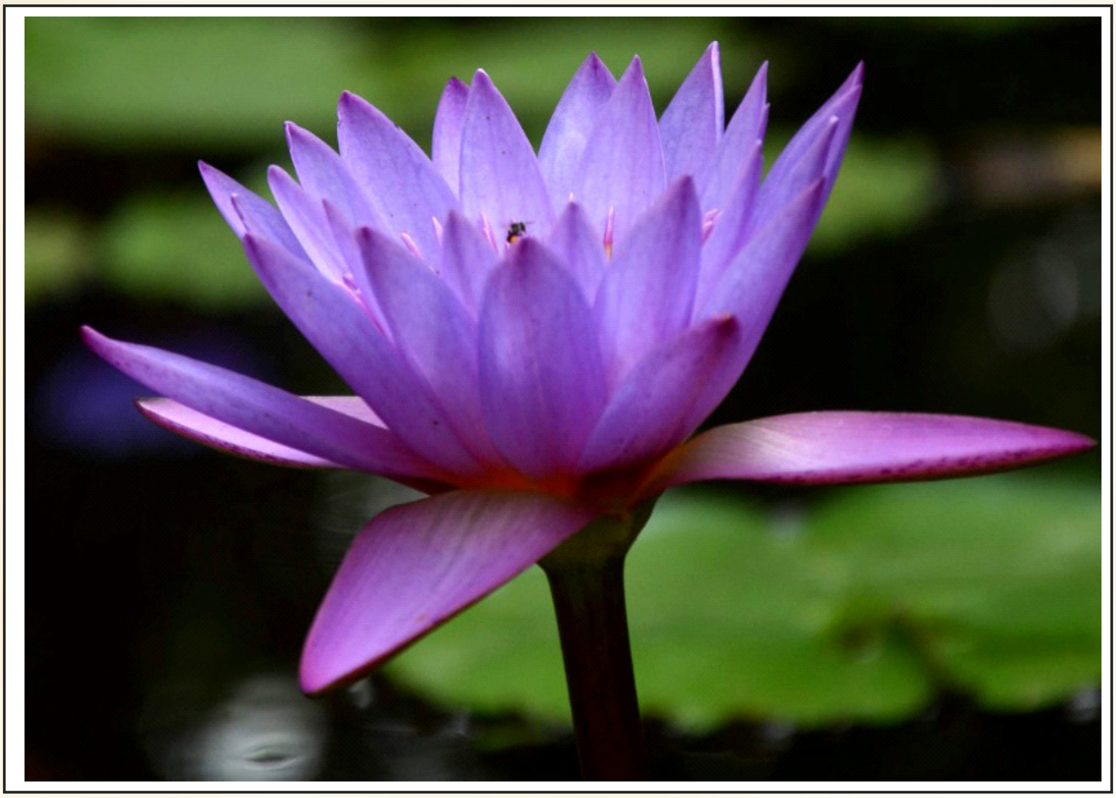

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I)
एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,
केरल, तिरुवनंतपुरम

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

हिंदी ई-गृह पत्रिका

अप्रैल 2022 - सितम्बर 2022

मुख्य संरक्षक
डॉ बिजु जेकब
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक
सुश्री अनिम चेरियान
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक
श्रीमती यशोदा
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशा.एवं लेप. प्रबंधन समूह-I)

परामर्शदाता
श्री पी के लालु
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशा.)

सदस्य

श्रीमती एस. लक्ष्मी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका
हिंदी अधिकारी

श्रीमती राधिका टी वी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री अनीता दास
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती विष्णुदेवी राजसेनन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा
हिंदी अधिकारी

श्रीमती बबिता
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री सादत हुसैन रिज़वी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं, संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है

सत्यमेव जयते

हिंदी दिवस 2022

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

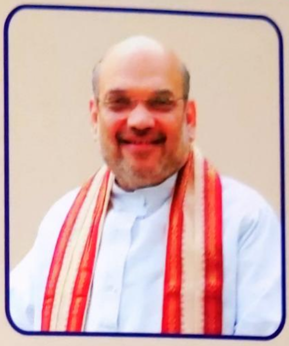

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

संदेश

आज़ादी के अमृत महोत्सव के इस पावन अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई ।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारी कार्यालयीन हिंदी ई-गृह पत्रिका का नवीनतम अंक इस पवित्र अवसर पर प्रकाशित हो रहा है। संविधान की अपेक्षाओं तथा संघ सरकार की नीतियों के सच्चे अनुपालन के लिए हिंदी भाषा को अपने कार्यालयीन गतिविधियों में शामिल करना हमारा कर्तव्य बनता है लेकिन हिंदी को रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भी अपनाएं तो सोने पे सुहागा जैसी बात होगी । शासकीय प्रयोजनों के लिए हो या सृजनात्मक उद्देश्य के लिए हिंदी के सहज, सरल और शालीन रूप को अपनाया जाए और अभिव्यक्ति को सहीं मायनों में सार्थक बनाएं। हिंदी भाषा को सहज अनुवाद की भाषा न बनाकर उसी में ही मूल कार्य करने की कोशिश करनी चाहिए। नेमी कार्यों को निभाते समय राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने का उद्देश्य भी ज़हन में हो। मैं आशा करता हूं कि आज़ादी के अमृत पर्व के अवसर पर तिरंगे के साथ-साथ हमारी धरती की भाषा को भी गर्व के साथ अपनाया जाए।

हिंदी ई-गृह पत्रिका 'सविता' के सफल प्रकाशन के लिए सहयोग देने वाले रचनाकारों तथा संपादक मण्डल का हार्दिक अभिनंदन। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मंगलकामनाएं।

बिजु जेकब

बिजु जेकब
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)

संदेश

आज़ादी के अमृत महोत्सव के इस खुशनुमा मौके पर हमारी गृह पत्रिका 'सविता' का ताज़ा अंक प्रकाशित होना बहुत ही आनंददायक है। राजभाषा के प्रसार में हिंदी गृह पत्रिकाएं अपनी महत्ता साबित करती रही हैं। इन पत्रिकाओं का लगातार प्रकाशन हमारा नैतिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है। आज़ादी के इस अमृत काल में आत्मनिर्भर होना हमारा मुख्य लक्ष्य है। हमारा देश आर्थिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अपनी विशिष्ट पहचान को समेटते हुए प्रगति पथ पर अग्रसर है। भाषा के क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषाओं के साथ ही राजभाषा हिंदी का प्रचार संघ सरकार के कर्मी होने के नाते हमारा दायित्व बनता है। विश्व की समृद्ध भाषाओं में अग्रणी और राष्ट्रीय एकता की सूत्रधार हिंदी सिर्फ भाषा नहीं बल्कि भावों की अभिव्यक्ति है। पत्रिकाओं में कार्यालय के कार्मिक अपने जीवन के अनुभव, यात्राएँ, उपलब्धियाँ, राष्ट्रीय/ अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने के अपने वृतांत का उल्लेख करते हैं और देश भर के कार्यालयों में अपनी लेखनी का प्रदर्शन करते हैं, इससे उन कार्मिकों को भी प्रेरणा मिलती है जिनकी कलम अभी लेखनी से दूर है।

पिछले कुछ महीनों में हुई विविध कार्यालयीन गतिविधियों को समेटे हुए सविता का नया आकर्षक अंक तैयार करने के लिए मैं सभी सहकर्मियों का अभिनंदन करती हूं। कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के अपने मूल उद्देश्य को पूरा करने में हमारी पत्रिका 'सविता' प्रेरक सिद्ध होगी इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। पत्रिका के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद.. जय हिंदी ....

अनिम चेरियान

अनिम चेरियान
प्रधान महालेखाकार

संदेश

कार्यालय की अर्धवार्षिक गृह पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक को आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत हर्ष का अनुभव हो रहा है। आज़ादी के इस अमृत काल में अपनी स्वदेशी भाषा यानि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान देने एवं सरल सुगम हिंदी का प्रयोग करके संपूर्ण भारत के संपर्क भाषा के रूप में भी विकसित किया जाना है। इस कार्य में भारत के दक्षिण छोर केरल में स्थित हमारा कार्यालय राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास हेतु कृत संकल्पित है।

हमारी पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा प्रोत्साहन को समर्पित पत्रिका है। पत्रिका कार्यालय में राजभाषा हिंदी के वृहद प्रचार हेतु एवं कार्मिकों को हिंदी में भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक औपचारिक मंच भी प्रदान करती है । मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल व रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु मंगलकामनाएं।

जय भारत.. जय हिंदी...

पी के लालू
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक मंडल की ओर से.......

आज़ादी के अमृत महोत्सव पर आप सभी को हार्दिक बधाई । इस पावन अवसर पर कार्यालयीन हिंदी ई-गृह पत्रिका का नवीन अंक आप सब के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है ।

अनेकता में जो एकता है उसमें भारत की आत्मा बसी हुई है । हमारी धर्म, संस्कृति, भाषा और परंपराएं भले ही विभिन्न हो भारत के लोग सद्भाव, एकता और सौहार्द के साथ रहते हैं । भारत में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं में से हिंदी सबसे प्रचलित भाषा है, बोल-चाल एवं संपर्क की भाषा है । हिंदी की सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक योग्यता एवं सक्षमता पर विचार करने के पश्चात् ही भारत की राजभाषा के रूप में हिंदी चुनी गयी थी । अत: हिंदी भाषा के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान व्यक्त करना हम सभी का राष्ट्रीय दायित्व है ।

केंद्र सरकारी कर्मचारियों को हिंदी में सृजनात्मक कार्य करने के लिए उत्साहित तथा प्रोत्साहित करने में विभागीय पत्रिकाओं का बड़ा योगदान रहा है । कार्यालय से मुद्रित होने वाली राजभाषा संबंधी पत्रिकाएं कर्मचारियों की कल्पनाओं को पंख प्रदान करने में मददगार सिद्ध हुई हैं । मुझे पूरा भरोसा है कि हमारी गृह पत्रिका ‘सविता’ भी कार्यालयीन कर्मचारियों में हिंदी के प्रति ममता और अपनापन जगाने में कामयाब हुई है । मैं अपने उच्च अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं कि जिन्होंने अपने व्यस्ततम कार्यों में से अपना बहुमूल्य समय निकालकर पत्रिका के लिए सामग्री संकलन एवं प्रकाशन के लिए कुशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन किया । संपादक मण्डल एवं अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हिंदी भाषा को चुनने वाले रचनाकारों के सम्मिलित प्रयासों का समूर्त रूप है हमारी गृह पत्रिका का यह अंक । विभिन्न तथा रोचक विषयों पर लिखे गए लेखों, कर्मियों के बच्चों की चित्रकारियों के साथ पत्रिका की अवधि के दौरान कार्यालय में हुए कार्यकलापों को भी शामिल करके पत्रिका को आकर्षक बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है । इस कार्य में हम कहां तक सफल हुए यह आप जैसे सुधी पाठकगण ही बता पाएंगे । आपके विचारों एवं सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी ताकि हम पत्रिका को बेहतर बना सके ।

यशोदा

यशोदा

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं एएमजी I)

इस अंक में

	रचना	रचनाकार (सुश्री/श्री/श्रीमती)
1.	सेंटिनल आईलैंड की अनोखी दुनिया	दीपक, डी ई ओ
2.	माँ	ज्योति, लेखापरीक्षक
3.	यात्रा	पारितोष चौधरी, वरि लेखापरीक्षक
4.	जटायु रॉक की हैरतअंगेज़ यात्रा	श्रावण एस, सुपुत्र अम्बिली वी एस
5.	कान	सादत हुसैन रिज़वी, कनि हिंदी अनु.
6.	किडनी से है ज़िंदगी	अंजुम ज़हरा, पत्नी सादत हुसैन
7.	कश्मीर लद्दाख की यात्रा	सजीव कुमार एन (सं.2), स.ले.प. अधि.
8.	प्रश्नोत्तरी	सजीव कुमार एन (सं.1), स. ले.प. अधि.
9.	कुछ गांव अधूरे बसते हैं	बबीता, वरिष्ठ अनुवादक
10.	हमारे कार्यालय में दक्षिणी क्षेत्रीय क्रिकेट टूर्नामेंट	विष्णुदेवी राजसेनन, वरि.ले.प.अधि
11.	बिहार	सुनीता कुमारी, पत्नी शशि कुमार, ले.प.
12.	हिंदी को नए आयाम देता दक्षिण भारतीय सिनेमा	रोहित कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
13.	रक्षाबंधन	रश्मि शशिकुमार, पर्यवेक्षक
14.	प्यार की सही परिभाषा	मैथिली जे आर, सुपुत्री राखी पी ओ,
15.	कोशिश	उषा बर्टी, वरि. लेखापरीक्षा अधि.
16.	निजी क्षेत्र की समस्या	मालविका जे आर सुपुत्री राखी पी ओ,
17.	तब्दीलियां	राधिका टी वी, वरिष्ठ अनुवादक
18.	नुस्खा	श्री अनुराग शुक्ला
19.	बेटी	श्रीमती के एन बिंदु, पर्यवेक्षक
20.	माता पिता	अनिता दास, कनिष्ठ अनुवादक
21.	मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए राज्य वित्त पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन, केरला सरकार वर्ष 2022 के लिए रिपोर्ट संख्या 1 का सार	
22.	मंडला आर्ट में बनाई गईं कलाकृतियाँ	
23.	कार्यालय कर्मियों के बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स	

सेंटीनल आइलैंड की अनोखी दुनिया

दीपक
डी ई ओ

भारत विविधताओं का देश है ये सर्वस्वीकार तथ्य है लेकिन इसके निवासियों में एक ऐसी भी जनजाति है जो पूरे विश्व में सबसे अलग और अनोखी है यहां तक की भारत सरकार भी उनकी इस भावना की क़द्र करते हुए उनकी ज़िंदगी में दखल नहीं देती और उनके पास जाने की इजाज़त किसी को भी नहीं है । ये हैं अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह के नार्थ सेंटीनल आइलैंड में रहने वाले आदिवासी, इस जगह का क्षेत्रफल मात्र 60 किमी है लेकिन जंगलों से ये पूरा क्षेत्र भरा हुआ है, हालांकि वो खुद को किस नाम से पुकारते हैं ये अब भी राज़ है ।

संभवत: ये दुनिया की आख़िरी संपर्क नहीं की गई जनजाति है, और आज भी पाषाण काल के तरीकों से जी रहे हैं । खाना उगाकर नहीं खाते बल्कि शिकार पर जीते हैं या जो भी फल अनाज मिल जाए उस पर निर्भर हैं । जब सरकार की बार-बार की गई कोशिशों के बावजूद उन्होने बाहरी दुनिया से संबंध रखने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई तो उन्हें उनके ही हाल पर जीने देने की छूट दिये जाने का फैसला किया गया । 1997 से सरकार ने 'आइज़ ऑन हैन्ड्स ऑफ़' की नीति अपनाई यानि हम नज़र रखेंगे ज़रूरत पड़ने पर मदद करेंगे लेकिन उनसे दूर रहेंगे ।

दिलचस्प बात ये है कि उनकी दुनिया उस आईलैंड तक ही सिमटी हुई है यहां तक की 2004 की सुनामी भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकी और सुनामी के बाद हुए हवाई सर्वे में उनका हालचाल अच्छा होने का अंदाज़ा इस बात से लगाया गया कि उनका हवाई सर्वेक्षण करने गए हेलिकॉप्टर पर भी वो तीर चलाने से नहीं चूके.... कमाल है । 1975 के दौर में, इस आइलैंड पर त्रिलोकनाथ पंडित नाम के व्यक्ति कुछ तोहफ़े, नारियल वगैरह लेकर गए लेकिन उन लोगों ने तीर से हमला कर दिया और सारी कोशिशें धरी की धरी रह गईं । कहा जाता है कि इन आदिवासियों की बाहरी दुनिया में कोई दिलचस्पी नहीं है और उन्होंने इसे कई बार साबित भी किया है, अंग्रेज़ी शासन के दौरान भी उनसे मिलने, संपर्क बनाने की तमाम कोशिशें की गईं लेकिन सब कुछ नाकाम रहा ।

सेंटेनलीज आदिवासियों के लिए बाहरी दुनिया का कोई वजूद ही नहीं है । वे अपने इलाके में किसी भी बाहरी का दखल बर्दाश्त नहीं करते । भारतीय मानवविज्ञान सोसायटी ने इन आदिवासियों से संपर्क करने की कोशिश की थी और उनके लिए केले और नारियल छोड़े थे, लेकिन उन्होंने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई । ये आदिवासी अंडमान में सबसे निजी आदिवासियों में

से एक हैं। वे आक्रामक हैं और बाहरी लोगों पर तीरों तथा पत्थरों से हमला करने के लिए पहचाने जाते हैं हालांकि विशेषज्ञ इनमें से किसी भी मौत के लिए आदिवासियों को ज़िम्मेदार नहीं मानते क्योंकि वह किसी भी बाहरी दखल को अपने लिए खतरे के तौर पर देखते हैं। यही वजह है कि वे बाहरी लोगों पर हमला करके उनकी जान ले लेते हैं।

1991 में मधुमाला चट्टोपाध्याय द्वारा इस आइलैंड पर जाने पर पहली बार कुछ सकारात्मक रूझान देखने को मिला शायद वो महिला थी इसलिए। हालांकि एक बच्चे ने उन पर निशाना लगाने के लिए धनुष बाण उठा ही लिया था लेकिन उसके साथ खड़ी एक महिला ने उसे तीर चलाने से रोक दिया। मधुमाला ने उन्हें नारियल व कुछ तोहफे दिए और यही आख़िरी सकारात्मक कोशिश रही।

2006 में दो मछुआरों की नाव इस जगह के करीब ख़राब हो गई बदकिस्मती से उनकी भी हत्या कर दी गई। अब सरकार ने इस जगह से पांच किलोमीटर के क्षेत्र में आने-जाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। 2018 में जॉन चाउ का किस्सा आख़िरी रहा। क्योंकि जॉन उलन चाउ नाम के अमेरिकी ने इस जगह पर रहने वालों से मिलने और उन्हें ईसाईयत का और प्रभु यीशु का परिचय कराने की ठानी और एक मछवारे को ₹25000 देकर उस आइलैंड पर जाने की गुस्ताख़ी की। मैं गुस्ताख़ी इसलिए कह रहा हूं क्योंकि बाद में उन आदिवासियों ने जॉन की हत्या कर दी।

जॉन इनके करीब पहुँचे और बाईबल हाथ में लेकर पढ़ना शुरू की और तब ही तीरों से हमला कर दिया गया। यहां सोचने वाली बात है कि शायद जॉन प्रकृति का ईशारा नहीं समझ पाए जब उस आदिवासी बालक का मारा हुआ तीर सीधे जॉन के हाथ में रखी बाईबल के पेज नंबर 493 तक घुसा क्योंकि वो बाईबल जॉन के सीने के बिल्कुल सामने थी यानि ईश्वर ने उनको बच निकलने का एक मौका दिया था। लेकिन वो इसे समझ नहीं पाए। वो अपनी भाषा में चिल्लाने लगे। जॉन भी उनके बोले लफ़्ज़ दोहराने लगे। ताकि उनसे बात कर सकें साथ ही जॉन ने ये भी कहा कि 'मेरा नाम जॉन है, मैं तुमसे प्यार करता हूं, यीशू भी तुमसे प्यार करते हैं।'

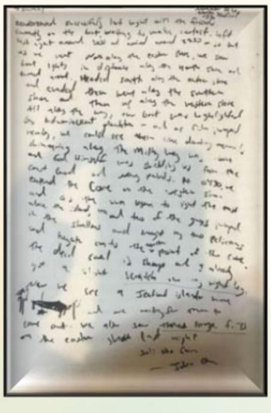

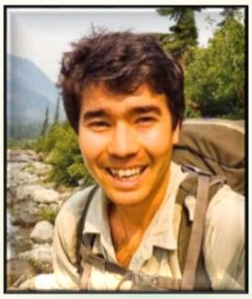

लेकिन इस सबका उन पर कोई असर नहीं पड़ा और जॉन ने डायरी में इनके बारे में कुछ इस तरह लिखा कि 'हे जीसस क्या ये लोग पूरी तरह शैतान के कब्ज़े में हैं जो तुम्हारा नाम भी नहीं सुनना चाहते।' कुल मिलाकर वो उस आइलैंड के निवासियों का

परिचय यीशू से करवाना चाहते थे । हालांकि जॉन ने इनके बारे में अपनी डायरी में बहुत सी हैरतअंगेज़ बातें लिखी हैं । जॉन के मुताबिक यहां लगभग 250 लोग रहते हैं ।

इतने लंबे अर्से तक बाहरी दुनिया से नावाकिफ़ रहते हुए भी समुद्र के बीच वो जी पा रहे हैं। प्रकृति को कोई नुकसान नहीं किया साथ ही अपनी आबादी को नियंत्रित रखा और प्रकृति के साथ दोस्ताना व्यवहार इनकी पहचान है । वास्तव में ये हमसे पीछे हैं या हम आभासी और नकली दुनिया के झूठे मकड़जाल में उलझे हुए हैं ये सोचनीय है । अच्छा है ये हमसे न मिलें...न ये हमसे मिलेंगे न कोरोना होगा..ना फेसबुक.. न व्हाट्सअप.. न दिखावटी रिश्ते..न पैसा....न लालच.. न धोखेबाज़ी.. कुछ भी नहीं होगा और इनका जीवन बिना किसी उलझन के चलता रहेगा ।

माँ

ज्योति
लेखापरीक्षक

एक हुजूम आया था, मेरी झूठी परवाह के लिए,

मैंने कहा यह छल रहने दो,

आंचल मैला है मेरी माँ का
लेकिन मेरे सर पर यह मैला आंचल रहने दो ।।
नहीं चाहिए यह दिखावे का मकान मुझे,

उसकी गोद में महफ़ूज़ हूं मैं
बचपन की सारी यादें यहीं सिमटी हुई हैं
मेरा यह महल रहने दो ।।
हलचल होती है घर से बाहर जाते ही
जब वह मेरा चेहरा निहारती है मुझे यही ठहरना है
मेरे यह सुकून के पल रहने दो ।।
डरती हूं धूप में निकलने से
कहीं मेरा यह शरीर तप ना जाए
मुझे आदत नहीं है उसके छांव के बिना रहने की
मेरे सर पर यह ममता के बादल रहने दो ।।
आंचल मैला है मेरी माँ का
मेरे सर पर यह मैला आंचल रहने दो ।।

यात्रा

पारितोष चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

इंसान का जीवन एक यात्रा है । हम जीवन एक यात्री की तरह गुज़ारते हैं और बहुत सी चाही-अनचाही मंज़िलों के पड़ावों पर ठहर कर अपनी ज़िंदगी के सफ़र को पूरा करते हैं । कई लोगों की ज़िंदगी एक क्षेत्र विशेष के दायरे में ही सिमट कर रह जाती है जबकि बहुतेरे जीवन के सफ़र का भरपूर आनंद लेते हैं। उनका मानना होता है 'एक रास्ता है ज़िंदगी जो थम गए तो कुछ नहीं ।'

जीवन की सभी यात्राएं अपने आप में अनोखी और नए अनुभव देने वाली होती हैं। हर सफ़र नए लोगों से मेल मुलाकात का, उनकी संस्कृति, रहन-सहन को करीब से जानने का बेहतरीन अवसर होता है जिससे प्रभावित होकर हमारी ज़िंदगी में भी कुछ न कुछ अच्छे बदलाव आते हैं । हम में से कई लोगों का शौक होता है घूमना-फिरना, मौज मस्ती करना.. पहले के ज़माने में ये सब इतना आसान नहीं था । कम ही लोग होते थे जिनके पास एक जगह से दूसरी जगह जाने के संसाधन मौजूद थे । इक्का दुक्का अमीरों के पास कार के नाम पर एम्बेसेडर कार हुआ करती थी बाकियों का सहारा बस या ट्रेन ही थी इसलिए पहले के समय शादी-ब्याह आदि आसपास के गांवों में ही तय कर दिए जाते थे और एक लम्बे अरसे तक बारात बैलगाड़ी से ले जाने की परंपरा समाज में विद्यमान थी ।

ख़ैर इस सबके अलावा यात्रा का दूसरा पहलू ये भी है कि ये हमारे मानसिक तनाव और चिंताओं को भी दूर करती है । भारत के अधिकांश रहवासी गर्मियों में यात्राओं पर निकलते हैं हालांकि गर्मी की छुट्टियों का चलन अंग्रेज़ी परंपरा की देन है लेकिन अब भी हमारे समाज में प्रचलन में है । हम में से कई लोगों का बचपन दादी नानी के घर गर्मियों की छुट्टियों का वक़्त गुज़ारते और उनकी खट्टी-मीठी फ़टकार व बहुत सारे अपनेपन के बीच गुज़रा है....वो भी क्या दिन थे उन दिनों की यादें आज भी ' नाइंटीज़' के ज़माने के बच्चों के ज़हन में ताज़ा होंगी। हालांकि नई पीढ़ी के ज़्यादातर बच्चों के जीवन से ये उमंग, खुशी और बहुत सारे प्यार को समेटती हुई ददिहाल ननिहाल की यात्रा का बेहतरीन अवसर का दौर ख़त्म हो चुका है । क्योंकि काम और कैरियर की वजह से अधिकांश लोगों का यात्रा के लिए समय निकालना दूभर हो गया है और अब ज़िंदगियां न्यूक्लियर परिवार का रूप ले चुकी हैं । बच्चे घर ही घर में बड़े होने लगे हैं और मोबाईल ही उनके खेल का मैदान, ददिहाल-ननिहाल, ताज़ी खुली हवा में सांस लेने का परिचायक बन गया है ।

मां-बाप के पास बच्चों के लिए वक़्त नहीं है । उनकी ज़िंदगी बस दफ़्तर की दौड़-धूप में, पैसे कमाने की चाह में और ज़िंदगी को काटने में गुज़र रही है । अब अगर कहीं जाने की योजना बनती भी है तो वापसी का टिकट पहले ही बुक हो जाता है और कहीं गए तो आंखों के सामने पड़ा हुआ बैग वापसी की घड़ियां गिनता नज़र आता है। सफ़र हम सब अभी भी कर रहे हैं लेकिन वो अब 'ज़िंदगी एक सफ़र है सुहाना' की जगह 'ज़िंदगी का सफ़र है ये कैसा सफ़र कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं' जैसा सफ़र बन गया है। आज यात्रा करने

के जितने साधन मौजूद हैं उनमें मुझे सबसे ज़्यादा रेल से यात्रा करना पसंद है।

रेल से सफ़र करना हमेशा से मेरे लिए रोमांचक रहा है । देश भर के हैरतअंगेज़ नज़ारों को अपनी छोटी सी खिड़की से दिखाती भारतीय रेल न जाने मुझ जैसे कितने ही आम भारतीयों के जीवन में अनगिनत खूबसूरत यादों को समेटे हुए हैं । अंजाने मुसाफ़िरों के साथ दूर कहीं की यात्रा के दौरान उनसे बातें करना उनकी संस्कृति, बात करने के लहजे से देश की विभिन्नता का दर्शन करना, ये सब मुझे बहुत रोमांचित करता है । एक तरह से देखा जाए तो हरेक ट्रेन अपने अंदर देश के विभिन्न कोनों के यात्रियों को समेटे होती हैं.... अपने आप में चलता फिरता देश होती हैं रेलगाड़ियां...। चाहे कितना भी लम्बा सफर हो, छोटे बच्चों को भी रेल यात्रा में आनंद लेते देखा जा सकता है ।

वातानुकूलित डिब्बे इस सफ़र को आरामदायक बनाते हैं, जिससे बुज़ुर्ग व विकलांग यात्री भी सहूलियत के साथ सफर कर सकते हैं । पहले के ज़माने में चलने वाला स्टार वाला इंजन तो देखने में इतना खूबसूरत लगता था कि उसे देखने लोग ख़ासतौर से स्टेशन जाया करते थे ।

आज भारतीय रेलवे, राजधानी, शताब्दी, दुरंतो जैसी तेज़ गति से चलने वाली ट्रेनों के साथ देशवासियों को अपने गंतव्य तक पहुंचा रही है । ये रेलगाड़ियां, जहां देश की शान हैं, वहीं आधुनिक तकनीक से सुसज्जित वंदे भारत एक्सप्रेस और तेजस जैसी रेलगाड़ियां भारतीय रेलवे के माथे की बिंदी और सिर का ताज बनी हुई हैं, जो पहियों पर दौड़ती आधुनिक इंजीनियरिंग की जीती जागती तस्वीर है ।

कुल मिलाकर हर यात्रा हमारे दिलो-दिमाग को तरोताज़ा करने और अंर्तमन को नए उत्साह से भरने में अहम भूमिका अदा करती है । जब भी आप ज़िंदगी में बोरियत महसूस करें...यात्रा करें....अपने जीवन को नई उमंगों से भरें ।

श्रावण एस
सुपुत्र अम्बिली वी एस
प्र.म.ले. का वैयक्तिक सहायक

जटायु रॉक की हैरतअंगेज़ यात्रा

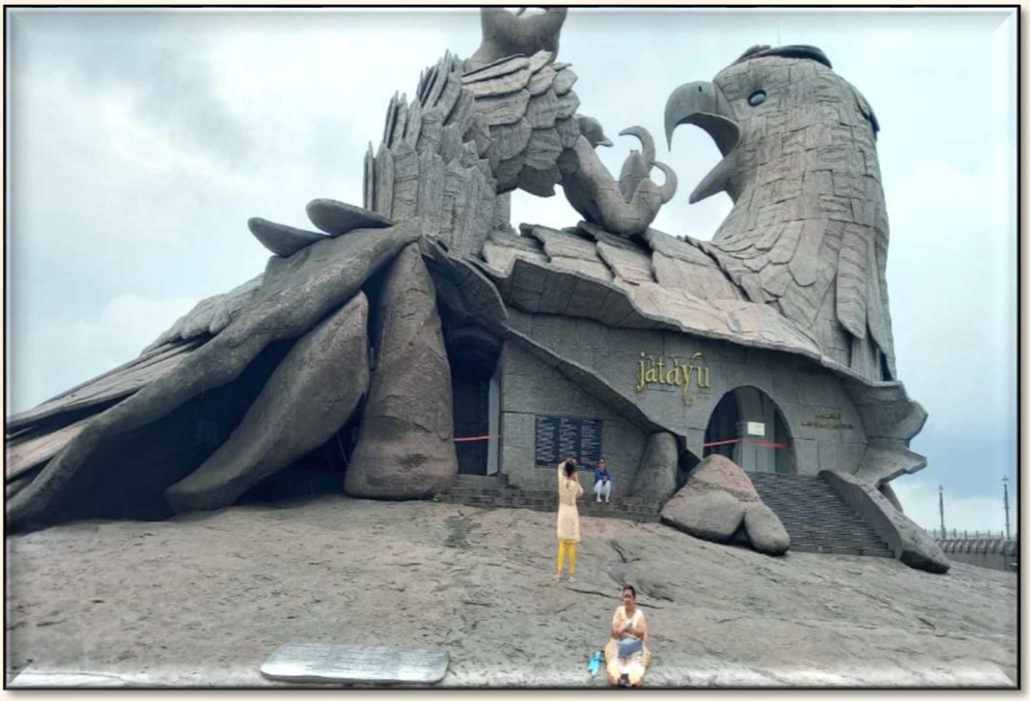

15 मई को, अपने माता-पिता और बड़े भाई सहित हम सभी जटायु चट्टान (Jatayu Nature Park, Kollam) घूमने गए जो मेरे घर से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित एक ऊँची चट्टान है। जब भी हम उस रास्ते से जाते थे तो सोचते थे कि एक दिन हम चट्टान पर जाएंगे, आखिर वह दिन आ ही गया। थोड़ा संकोच था कि जाना है या नहीं, क्योंकि सुबह से बारिश हो रही थी, लेकिन वहां पहुंचने पर बारिश धीरे-धीरे बंद हो गई और वास्तव में इससे मौसम और सुहावना हो गया और इसने सफर को और भी खुशगवार बना दिया वर्ना भरी दोपहरी के वक़्त चट्टान के शीर्ष पर बहुत गर्मी होती। बारिश के कारण हमने दोपहर में ही अपने सफर की शुरुआत की थी।

केरल के कोल्लम ज़िले में स्थित जटायुपारा में पत्थर की कलाकृति पर जटायु का निर्माण किया गया है और एडवेंचर सेंटर की सबसे दिलचस्प विशेषता है, दुनिया की सबसे बड़ी पक्षी की मूर्ति -जटायु पक्षी, जो रामायण का एक पौराणिक चरित्र है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, सीता (भगवान राम की पत्नी) को बचाने की लड़ाई में

जटायु की मृत्यु हो गई थी, जब लंका के राक्षस राजा रावण अपने जादुई उड़ते रथ में उनका अपहरण कर ले जा रहे थे । जटायु ने वीरतापूर्वक युद्ध किया लेकिन सीता को बचाने में असफल रहे और गंभीर रूप से घायल अवस्था में यहां चट्टानों पर गिर पड़े ।

यह पक्षी मूर्तिकला आज भारतीय महाकाव्य रामायण को स्मरण करते हुए, पौराणिक पक्षी जटायु को श्रद्धांजलि देता है और इसके भीतर साहसिक उत्साही लोगों के लिए एक रॉक थीम पार्क भी है । चट्टान के शीर्ष पर एक राम मंदिर है जहाँ हम आध्यात्मिक शांति महसूस कर सकते हैं । साथ ही अठखेलियां करते हुए बंदर भी वहां देखे जा सकते थे ।

शीर्ष पर जाने के दो रास्ते हैं - सीढ़ियाँ चढ़कर और रस्सी के रास्ते (cable car) से भी जा सकते हैं । हमने रोप वे का चयन किया और यह वास्तव में एक शानदार अनुभव रहा क्योंकि केवल कार से, गॉड्स ओन कंट्री, केरल के कुछ हैरतअंगेज़ विहंगम दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है । मंद मंद हवा के साथ शीर्ष पर वास्तव में अच्छा वातावरण था और ऊपर से आसपास के क्षेत्र का शानदार हरियाली भरा दृश्य और उस विशाल पक्षी मूर्तिकला के नज़ारे को लफ़्ज़ों में नहीं बयान किया जा सकता है । इतना ही नहीं, भोजन के लिए, साइट पर एक बहु-व्यंजन फूड कोर्ट है जहाँ पर आगंतुक कुछ नाश्ता करते हुए आसपास के अद्भुत मनोरम दृश्यों का आनंद ले सकते हैं ।

इसके अलावा वहां वैली क्रॉसिंग, ट्रेकिंग, रैपलिंग, बोल्डरिंग, तीरंदाजी, जुमरिंग और वॉल क्लाइम्बिंग सहित अन्य साहसिक गतिविधियाँ भी की जा सकती हैं, लेकिन कोविड के कारण इन सभी को फिलहाल बंद कर दिया गया है इसलिए हम इन सब का आनंद नहीं ले सके । पहाड़ी पर प्राकृतिक चट्टानें हैं, जहां सभी चढ़ाई संबंधी गतिविधियों को डिज़ाइन किया गया है ।

शाम को ऊपर ही गरमा-गरम चाय नाश्ता करके साढ़े पांच बजे के करीब हम वहाँ से लौटे, वापसी के सफर में भी थोड़ी बारिश हो रही थी ।

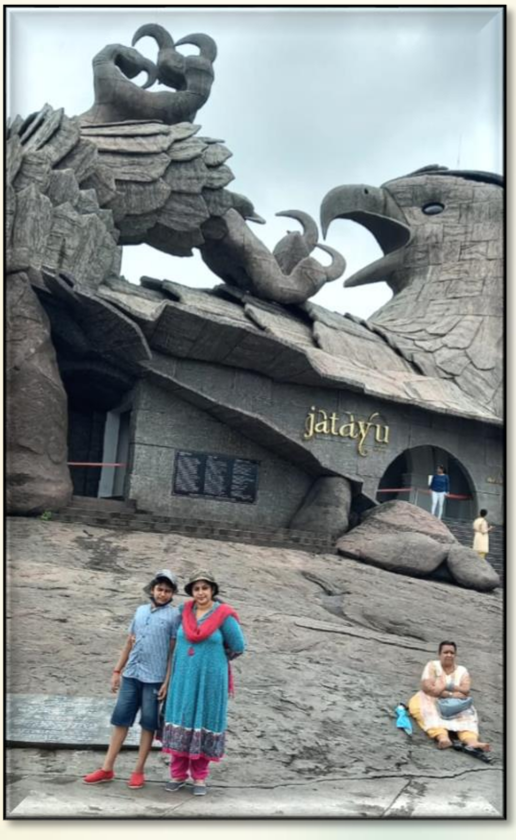

सादत हुसैन रिज़वी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कान

वैसे तो मानव शरीर ईश्वर की महान संरचना है और हरेक अंग का अपना महत्व है भले ही चिकित्सा विज्ञान ने बहुत तरक्क़ी कर ली है लेकिन शनै: शनै: कुदरत ने विज्ञान को बोना साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, कोरोना इसका साक्षात् उदाहरण है।

ख़ैर, इस आलेख में कान की बात की जा रही है। कान, वो ख़ास अंग जो हमें दूसरे की बातें सुनने में मदद करता है और हम कोयल की मधुर आवाज़ के साथ ही कौए की कर्कश ध्वनि भी सुन पाते हैं। और दुनिया भर की बकवास भी हमारे ज़हन तक कान ही पहुंचाते हैं। वैसे दूसरों की बुराई सुनने के शौकीन लोगों के लिए कान बहुत ख़ास महत्व रखते हैं। होते हैं न कुछ लोग जिन्हें गॉसिप सुनने का, कानाफूसी करने का बहुत शौक होता है ऐसा इसलिए क्योंकि एक दूसरी तरह के भी लोग होते हैं जिनको जैसे ही किसी के बारे में कोई ख़बर पता चलती है तो दूसरों को सुनाने के लिए उनका पेट फूल जाता है। वो पिक्चर का सीन तो याद ही होगा आपको जिसमें परेश रावल का पेट फूल जाता है। और जैसे ही अपनी बात दूसरों को बता देता है तो उसका पेट सामान्य हो जाता है। सोचिए अगर वास्तविक दुनिया में ऐसे ही चुगलखोर लोगों का पेट फूलने लग जाए तो दुनिया की एक बड़ी आबादी कैसी दिखेगी ? कान अच्छे होने के तो फ़ायदे हैं ही लेकिन कान ख़राब होने यानि 'बहरा' होने का तो एक बेहतरीन फ़ायदा है।

लोग आपसे ज़्यादा बात नहीं करते, क्योंकि पता रहता है कि सामने वाला व्यक्ति सुनेगा नहीं और ज़ोर ज़ोर से बोलने की ज़हमत उठानी पड़ेगी। इसका फ़ायदा ये है कि न इंसान किसी की सुनेगा न टेंशन लेगा, न टेंशन लेगा न बेवजह के ख़याल उसकी ज़िंदगी में खलल डालेंगे और वैसे भी जिसने ली टेंशन उसकी बीवी ने खाई पेंशन। हम दिन भर में न जाने कितनी ही फ़िज़ूल बातें सुनते हैं जिनका न हमसे कोई संबंध होता है लेकिन फिर भी हमारे ज़हन में गूंजती रहती हैं। किसी बहरे व्यक्ति के लिए जीवन जीना दूसरों से ज़्यादा आसान है बहुत सी ग़ैर-ज़रूरी ख़बरों से अंजान है वो।

कमज़ोर आंखों वाले इंसान तो बिना कान के कुछ देख ही नहीं पाते...कैसे..!!! अरे वो अपना चश्मा कैसे पहनते ? और भैया ईश्वर की इतनी पुरानी रचना कान ने अपने वजूद की सार्थकता 2020 में तब और ज़ाहिर की जब कोरोना आया, क्योंकि कोरोना आया तो ज़रूर लेकिन हम सबकी हिफ़ाज़त के लिए मास्क भी मिलने लगे और मास्क पहनने के लिए कान नहीं होते तो सोचो कैसे होती इंसान की सुरक्षा। ईश्वर ने खोपड़ी के दोनों तरफ़ कान देकर ये सहूलियत दी.. की लो बेटा... पहनो मास्क।

दुनिया की अर्थव्यवस्था को गति देने में भी कानों का विशेष योगदान है । कान हैं तो मोबाईल का व्यापार है भारत के सबसे अमीर व्यक्ति को इतनी शोहरत बख़्शने में परोक्ष रूप से कानों का ही योगदान है । आज हर हाथ में मोबाईल है इतनी टैक्नोलॉजी की तरक्क़ी है ऑनलाईन शिक्षा है ये सब कुछ है, क्योंकि कान हैं ईश्वर ने सिर्फ़ दो कान बनाकर दुनिया को तकनीक में आगे बढ़ने का कितना मौका दिया है। कान हैं तो नेटफ्लिक्स है, अमेज़ॉन प्राईम के मज़े हैं, वेब सीरीज़ है, पूरी डिजिटल दुनिया आपके क़दमों में है ।

हालांकि कानों के कारण लड़ाईयाँ भी हो जाती हैं, क्योंकि कच्चे कान के लोग किसी की भी बातों में आ जाते हैं और आपस में भिड़ जाते हैं । वैसे ईश्वर ने दो कान इसलिए भी दिए हैं कि इंसान सुने ज़्यादा और बोले कम । लेकिन मोबाईल के ज़माने में जिसको देखो वो बस फोन पर लगा रहता है और ये हेडफोन बनाने वाली कंपनियों के बारे में क्या ही बोलूं... कान में लीड लगाने की सुविधा देकर हर इंसान को इतनी सहूलियत दे दी है कि लोग और ज़्यादा ही व्यस्त रहने लगे हैं । कानों के साथ एक दिक्कत ये भी है कि लोग सुनते कुछ हैं, समझते कुछ और ही हैं और आगे दूसरों को कुछ और ही बढ़ा चढ़ाकर सुना देते हैं । कुछ लोगों को इस सबमें बहुत मज़ा आता है । आत्मिक शांति का अनुभव करते हैं वो लोग । इसलिए कहावत बनी है कि कानों से सुने पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए, जब तक आंखों से देख न लो ।

हम में से बहुतों के कान बंद रहते हैं ये हमें तब पता चलता है जब हम किसी कानों के डॉक्टर के पास जाते हैं, तो सभी सज्जनों से ये निवेदन है कि अपने कानों का बहुत ध्यान रखें । सुने उतना ही जो काम का हो और अच्छी सुकून भरी ज़िंदगी जीने के लिए वो सब न सुने जो मन पर बेवजह का बोझ डाले। याद रखें.. कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना...। कानों की इतनी तारीफ़ काफी है अब ख़त्म करता हूं आप सबको कान मुबारक !!!

अखिल भारतीय नीट पी जी परीक्षा में 105वी
रैंक प्राप्त करने पर सुश्री मरिया तोमस
सुपुत्री श्रीमती आशा मात्यु,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी को
हार्दिक बधाईयाँ

किडनी से है ...ज़िंदगी

अंजुम ज़हरा
पत्नी सादत हुसैन रिज़वी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

प्रत्येक वर्ष 12 मार्च को विश्व किडनी दिवस मनाया जाता है, अपनी किडनी की सेहत के लिए कुछ संकल्प लेने का दिन। क्योंकि सेहतमंद ज़िंदगी के लिए सेहतमंद किडनी का होना बेहद ज़रूरी है। यदि एक व्यक्ति की किडनी खराब हो जाए तो उसे पूरी तरह से ठीक नहीं किया जा सकता है या तो व्यक्ति डायलिसिस पर जीता है या फिर किडनी बदलवानी पड़ती है, जो कि बेहद जटिल प्रक्रिया है । किडनी को लेकर जागरूक होना बेहद ज़रूरी है । जागरूकता इसलिए भी ज़रूरी है, क्योंकि हाइपरटेंशन और डायबिटीज़ जैसी बीमारियों से किडनी को ख़तरा बढ़ जाता है ।

हमारे शरीर में किडनी बहुत ज़रूरी काम करती है । यह होती तो बहुत छोटी है, मगर मानव शरीर को स्वस्थ्य रखने व शारीरिक प्रक्रियाओं के सफल संचालन में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । आइये किडनी के कामों पर सरसरी निगाह डालें ।

- किडनी खून से एक्स्ट्रा पानी हटाती है
- विषैले रासायनिक पदार्थ जैसे- नाइट्रोजन, अमोनिया, यूरिया आदि को शरीर से बाहर निकालने का काम करती है
- ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखती है
- हड्डियों को सेहतमंद रखती है
- खून में मिनरल्स की मात्रा को नियंत्रित करती है

कुल मिलाकर किडनी हमारे शरीर में बाहर से आने वाली तमाम चीज़ों को छानती है और शरीर के अंदर की अवस्था जैसे पानी और ज़रूरी रसायन की मात्रा को नियंत्रित करती है ।

❖ आइए जाने की किडनी खराब होने के लक्षण क्या हैं- यदि व्यक्ति ध्यान दे तो किडनी खराब होने के कई लक्षण होते हैं, जिसमें किडनी की खराबी का शुरुआती लक्षण हैं- यूरिन का कम मात्रा में शरीर में बनना और कम मात्रा में शरीर से निष्कासित होना ।

❖ किडनी खराब होने के कारण शरीर के कई अंगों जैसे घुटना, टखना, पैर इत्यादि में सूजन आ जाती है । ये उन व्यक्तियों में देखा जाता है जिनकी अचानक से किडनी खराब हो गई हो, जिसे हम एक्यूट रिनल फैल्योर कहते हैं ।

जबकि वह व्यक्ति जिनके पेट में पानी भर जाता है जिसके कारण उनका पेट फूला हुआ लगता है इस अवस्था को क्रॉनिक रिनल फैलियर कहते हैं । इसमें व्यक्ति को उल्टियां, चिड़चिड़ापन, भूख में कमी, अनिद्रा हो जाती है। व्यक्ति को सांस लेने में तकलीफ होती है जब किडनी को सही मात्रा में रक्त नहीं मिलता तो वह अपना काम सही ढंग से नहीं कर पाती है और व्यक्ति को ऑक्सीजन की कमी होने लगती है जिसके कारण उसे सांस लेने में दिक्कत होना शुरू हो जाती है । जब व्यक्ति कुपोषित होता है तो उसमें थकान कमज़ोरी चिड़चिड़ापन देखा जाता है । कुपोषण के कारण व्यक्ति के खानपान में सही मात्रा में पोषक तत्व नहीं मिल पाते हैं । सहीं मात्रा में पोषक तत्वों का ना मिलना और वज़न में सामान्य से ज़्यादा कमी भी किडनी खराब होने का लक्षण है ।

सामान्यतः किडनी खराब होने के कई कारण होते हैं । कई कारण तो ऐसे होते हैं कि हम सोच भी नहीं सकते । जैसे- जलना (बर्न)- जलने की अवस्था में भी किडनी खराब हो सकती है क्योंकि जब व्यक्ति जलता है तो उसकी त्वचा से सोडियम, पोटेशियम, फॉस्फोरस जैसे मिनरल्स और पानी शरीर से बाहर निकल जाता है जिसके कारण किडनी काफी प्रभावित होती है । कोई व्यक्ति यदि मधुमेह यानि डायबिटीज़ और उच्च रक्तचाप से पीड़ित है तो भी किडनी खराब होने का अंदेशा रहता है, क्योंकि बढ़ी हुई शुगर किडनी पर पहले प्रभाव डालती है और उच्च रक्तचाप की अवस्था में किडनी को ज़्यादा काम करना पड़ता है । इसके अलावा गठिया की समस्या से पीड़ित व्यक्तियों की भी किडनी पर प्रभाव पड़ता है। कई व्यक्तियों को किडनी में पथरी हो जाती है जिसके कारण किडनी अपना छानने का काम सही ढंग से नहीं कर पाती है और कैल्शियम तथा ऑक्सेलेट जैसे तत्व किडनी में जमा हो जाते हैं ।

अल्कोहल महत्वपूर्ण कारण है किडनी खराब होने का । जो व्यक्ति रोज़ाना ज़रूरत से ज़्यादा अल्कोहल लेता है, उसकी किडनी जल्दी खराब हो जाती है ।

किडनी संबंधी किसी भी समस्या को जांचने के लिए कुछ टेस्ट कराए जाते हैं जिससे व्यक्ति को समय रहते उपचार करने का मौका मिल जाता है ।

जैसे- आरएफटी, जीएफआर टेस्ट, एक्सरे, यूएसजी आरएफटी - इस टेस्ट से खून में यूरिया, क्रिएटिनिन, यूरिक एसिड, सोडियम, पोटेशियम का पता चल जाता है कि खून में कितनी मात्रा में उपलब्ध है ।

- जीएफटी टेस्ट - इससे किडनी की बीमारी का पता चल जाता है, यदि व्यक्ति का
  - ○ जीएफआर 90 से कम (स्टेज 1 की बीमारी)
  - ○ यदि जीएफआर 89 से 60 (स्टेज -2)
  - ○ यदि जीएफआर 59 से 30 (स्टेज-3)
  - ○ यदि जीएफआर 30 से 15 (स्टेज 4)
  - ○ यदि 15 से कम (स्टेज 5) - (गंभीर स्थिति)

जब क्रॉनिक किडनी डिजीज़ होती है तो व्यक्ति को डायलिसिस या किडनी ट्रांसप्लांट करवाना पड़ता है । किसी व्यक्ति की किडनी खराब हो चुकी हो या वह व्यक्ति डायलिसिस पर है तो उसे 'डैश डाइट' दी जाती है । इसका मतलब यह कि नमक, मिर्च, मसाले रहित भोज्य पदार्थ व्यक्ति को दिया जाना चाहिए किडनी को स्वस्थ रखने के लिए हमें इस प्रकार का खानपान लेना चाहिए, खाने में ऊपर से नमक डालकर नहीं खाना चाहिए, बल्कि प्रोटीन, पोटेशियम, सोडियम फ्लूइड को नियंत्रित रखें । जितना व्यक्ति को आवश्यकता हो उतना ही लेना चाहिए । व्यक्ति को डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ जैसे- जूस, चिप्स, टोमॅटो सॉस आदि इन सब में सोडियम ज़्यादा होने की वजह से इनके ज़्यादा उपभोग से बचना चाहिए । इसके अलावा पापड़, अचार, चटनी आदि इस सब चीज़ों में भी सोडियम ज़्यादा होता है ।

हमें प्रतिदिन 1200 एम जी एलडी से कम सोडियम लेना चाहिए । जितना भी कच्चा नमक हम खाते हैं, जैसे सलाद के ऊपर डाल कर तो सोडियम की मात्रा बढ़ जाती है जिसके कारण ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है और किडनी पर असर पड़ता है । अगर पोटेशियम की बात करें तो हमें प्रतिदिन अपने खान-पान में नींबू पानी का उपयोग एक बार ज़रूर करना चाहिए, इससे पोटेशियम की मात्रा शरीर में सही बनी रहती है और किडनी सुरक्षित रहती है और ब्लड प्रेशर नहीं बढ़ता है ।

फास्फोरस जैसे- ब्रेड, ब्रॉन मार्केट के बेक्ड प्रोडक्ट्स जैसे कि बिस्किट इन सब में फास्फोरस ज़्यादा मात्रा में होता है । जितना ज़्यादा फास्फोरस होगा किडनी की हालत उतनी ही ख़राब होगी । माना जाता है कि दूध में भी ज़्यादा मात्रा में फास्फोरस होता है । कई लोग

सोचते हैं कि डाइट में कैल्शियम अधिक मात्रा में मिले तो लोग डाइट में दूध की मात्रा को बढ़ा देते हैं और दूध में जो फास्फोरस होता है, वह शरीर की हड्डियों से कैल्शियम को निकाल देता है इसीलिए हमें खाना खाते समय इसका ध्यान रखना चाहिए कि जो तत्व हमें जितनी मात्रा में ज़रूरी है उतना ही अपने खाने में उपयोग करें।

सामान्यत: हमें प्रतिदिन 3-4 लीटर पानी पीना चाहिए। कई लोग आर्टिफिशियल प्रोटीन सप्लीमेंट्स लेते हैं जो कि उन्हें नहीं लेने चाहिए क्योंकि किडनी को ही सब कुछ छानना पड़ता है यदि व्यक्ति ज़्यादा मात्रा में ऐसे सप्लीमेंट लेता है और दवाइयां जैसे पैरासिटामल लेता है तो बहुत ज़रूरी है कि हफ्ते में दो बार डेटॉक्स और क्लीनिंग करे ताकि व्यक्ति की किडनी स्वस्थ रहे। जितना व्यक्ति साधारण चीज़ें खाएगा उतना ही स्वस्थ रहेगा।

आइये जानते हैं कि हमें क्या खाना चाहिए-

- ओट्स, दलिया (कम मात्रा में दूध) पोहा, पराठे (घी/तेल नहीं)
- रोटी चावल बेसन का चीला (हफ्ते में 1 बार)
- गिलकी, लौकी, परवल, कद्दू आदि
- कॉर्नफ्लेक्स, बिना मलाई का दूध
- मटर, फल्ली, पत्तागोभी आदि, जौ का सत्तू।

जब भी हम कोई तैलीय चीज़ लेते हैं तो लीवर को ज़्यादा काम करना पड़ता है और उस वजह से यूरिया ज़्यादा उत्सर्जित होता है। इसीलिए तैलीय खाद्य पदार्थ भी नहीं लेना है। पराठे भी स्टफ करे हुए खाना चाहिए बिना तेल/घी के।

क्या नहीं खाना है-

- अंडा, चिकन, मीट, बेक्ड सामग्री, बिस्किट चिप्स
- अचार, चटनी, सॉस, चाय, कॉफी, नट्स
- संतरा, मौसंबी, केला, कीवी, एवोकैडो आदि
- मेथी, पालक, सरसों, बथुआ की भाजी आदि
- दूध और दूध से बने खाद्य पदार्थ
- आलू, शकरकंद, अरबी, चुकंदर, मूली

किडनी की समस्या वाले व्यक्ति को चाय और कॉफी का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि चाय कॉफी हमारे चयापचय पर प्रभाव डालती है। उसे स्लो डाउन कर देती है। किडनी के पेशेंट वैसे ही दवाइयां खाते हैं तो चाय कॉफी दवाई का एब्सॉर्बशन नहीं करने देती। ऐसे व्यक्ति को ग्रीन टी लेना चाहिए। वह भी कम मात्रा में परंतु यह ध्यान रखना है कि ग्रीन टी पीने के आधे घंटे पहले और बाद में कुछ खाना पीना नहीं है।

किडनी के 70% मामले हमारी लाइफ स्टाइल और खान-पान के तरीकों से जुड़े हैं, यदि हम अपने खान-पान पर ध्यान देंगे तो किडनी के साथ-साथ लीवर, हृदय, मस्तिष्क आदि शरीर के अंगों को भी स्वस्थ एवं सुरक्षित रख सकते हैं।

सजीव कुमार एन (सं.2)
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

कश्मीर - लद्दाख की यात्रा

कोरोना महामारी के बाद हम खुद को तरोताज़ा महसूस कराने के लिए कहीं घूमने जाने की योजना बना रहे थे। बहुत सोच विचार करके हमने कश्मीर जाने का फैसला किया। अन्य 32 लोगों के साथ इस धरती के स्वर्ग को देखने की योजना बनाई।

बिना किसी संदेह के कहा जा सकता है कि कश्मीर भारत के सबसे खूबसूरत राज्यों में से एक है। शिकारा, दर्शनीय घाटियां, हरी-भरी हरियाली, हिमालय पर्वत श्रृंखलाएँ, प्राचीन नदियाँ, कहवा चाय, सुकून और प्रकृति की शांति, कश्मीर के लोगों का मुस्कुराता हुआ चेहरा और उनका आतिथ्य आदि कुछ चीज़ें हर यात्री कश्मीर की यात्रा में अनुभव करेगा।

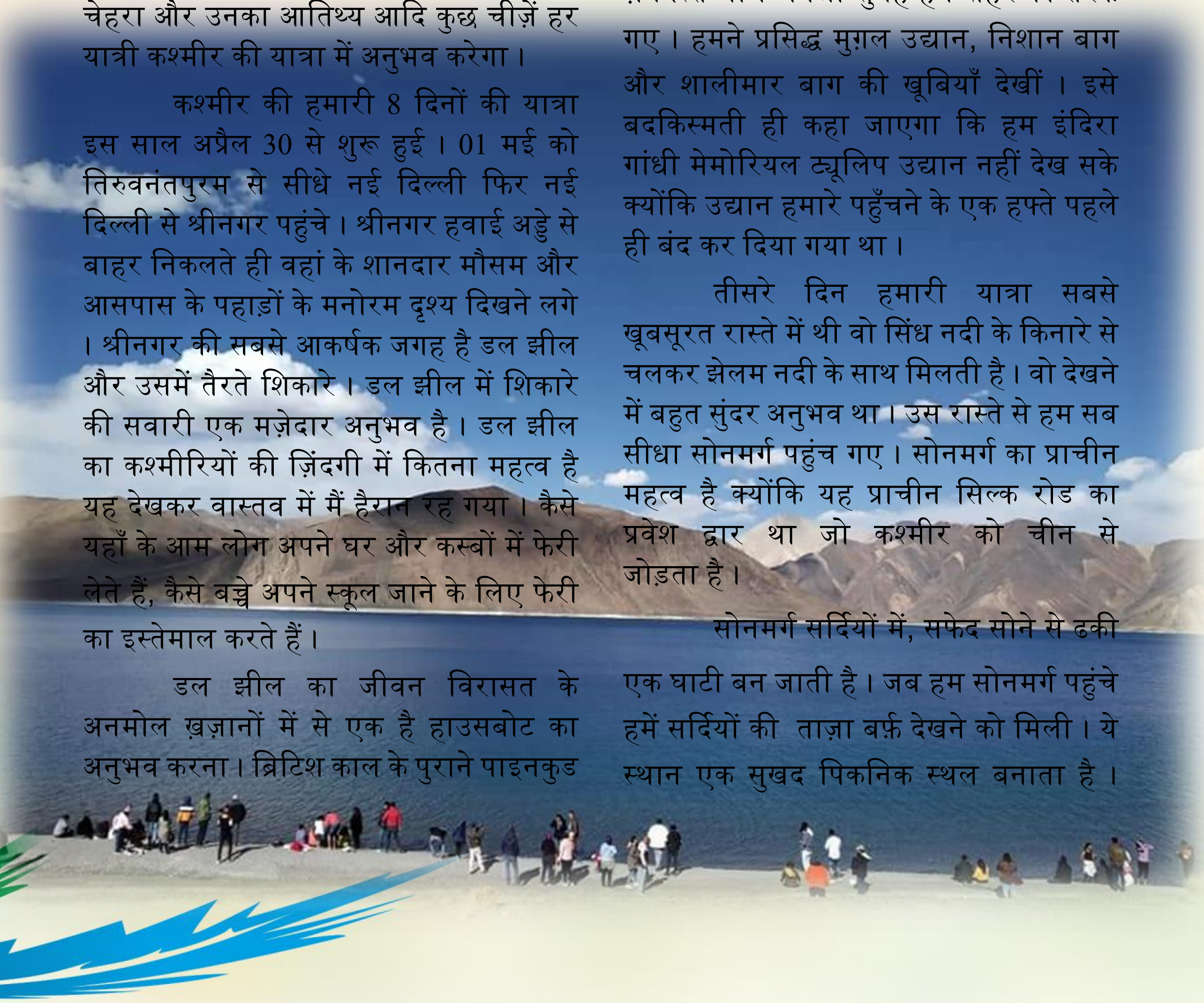

कश्मीर की हमारी 8 दिनों की यात्रा इस साल अप्रैल 30 से शुरू हुई। 01 मई को तिरुवनंतपुरम से सीधे नई दिल्ली फिर नई दिल्ली से श्रीनगर पहुंचे। श्रीनगर हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही वहां के शानदार मौसम और आसपास के पहाड़ों के मनोरम दृश्य दिखने लगे। श्रीनगर की सबसे आकर्षक जगह है डल झील और उसमें तैरते शिकारे। डल झील में शिकारे की सवारी एक मज़ेदार अनुभव है। डल झील का कश्मीरियों की ज़िंदगी में कितना महत्व है यह देखकर वास्तव में मैं हैरान रह गया। कैसे यहाँ के आम लोग अपने घर और कस्बों में फेरी लेते हैं, कैसे बच्चे अपने स्कूल जाने के लिए फेरी का इस्तेमाल करते हैं।

डल झील का जीवन विरासत के अनमोल ख़ज़ानों में से एक है हाउसबोट का अनुभव करना। ब्रिटिश काल के पुराने पाइनवुड से बनी, उनका रखरखाव और सजावट बहुत ही सुंदर है। हमको ऐसा लगेगा हम एक महल के अंदर हैं। शानदार कमरे और उसमें नवीनतम गैजेट जैसे हीटिंग सिस्टम, गीज़र, इलेक्ट्रिकल कंबल आदि के साथ और वाई फाई कनेक्टविटी के साथ सजाकर झील पर तैरती एक सपनों की दुनिया बसाई है।

शाम को एक कप पारम्परिक कहवा चाय के साथ पारम्परिक वज़वान दावत का लुत्फ़ उठाया जिसका ज़ायका बयान करने के लिए मेरे पास लफ़्ज़ नहीं हैं। हाउसबोट से डल के किनारों और आसपास का शाम का नज़ारा ज़बर्दस्त था। अगली सुबह हम शहर की तरफ गए। हमने प्रसिद्ध मुग़ल उद्यान, निशान बाग और शालीमार बाग की खूबियाँ देखीं। इसे बदकिस्मती ही कहा जाएगा कि हम इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्यूलिप उद्यान नहीं देख सके क्योंकि उद्यान हमारे पहुँचने के एक हफ्ते पहले ही बंद कर दिया गया था।

तीसरे दिन हमारी यात्रा सबसे खूबसूरत रास्ते में थी वो सिंध नदी के किनारे से चलकर झेलम नदी के साथ मिलती है। वो देखने में बहुत सुंदर अनुभव था। उस रास्ते से हम सब सीधा सोनमर्ग पहुंच गए। सोनमर्ग का प्राचीन महत्व है क्योंकि यह प्राचीन सिल्क रोड का प्रवेश द्वार था जो कश्मीर को चीन से जोड़ता है।

सोनमर्ग सर्दियों में, सफेद सोने से ढकी एक घाटी बन जाती है। जब हम सोनमर्ग पहुंचे हमें सर्दियों की ताज़ा बर्फ़ देखने को मिली। ये स्थान एक सुखद पिकनिक स्थल बनाता है।

सोनमर्ग से हम सीधा ज़ीरो पॉइन्ट पहुँचे । वहां कोई प्राकृतिक आवास नहीं है । ठंड का मौसम जीवन के किसी भी रूप में जीवित रहना लगभग असंभव बना देता है । शाम लगभग 5 बजे हम लोग पहुँचे द्रास, जो कि दुनिया का दूसरा सबसे ठंडा बसा हुआ स्थान है । वहाँ से कारगिल का आनंद लेते हुए टाइगर हिल के नज़ारे ने हमको देशभक्ति की भावना दी क्योंकि वहां की हवा में हमारे जवानों के बलिदानों के गौरव और सम्मान की खुशबू समाई हुई है जिन्होंने युद्ध में अपनी जान दी थी । रात में हम कारगिल के ही होटल में रुके ।

अगले दिन सुबह नाश्ते के बाद हम लोग लेह की तरफ रवाना हुए । रास्ते में लामयूरू, एक तिब्बती बौद्ध मठ की गंभीर बनावट देखने को मिली । लामयुरू अपने मठ के लिए जाना जाता है और इसके चंद्र परिदृश्य के लिए – पर्यटकों के लिए मूनस्केव के रूप में प्रसिद्ध है । रास्ते में हमको प्रसिद्ध 'मैग्नेटिक हिल' देखने को मिली वो बहुत ही आश्चर्यजनक लगा । लेह से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मैग्नेटिक हिल अपनी गुरूत्वाकर्षण – विरोधी घटना के लिए प्रसिद्ध है । शाम को हम लोग लेह पहुंच गए । अगले दिन हम नुब्रा घाटी के रास्ते में सावधानी से यात्रा शुरू किए वो रास्ते में खड़े और तीखे मोड़ शामिल हैं और इसके बाद कुछ स्थानों में विकृत सड़क है ।

अपने रास्ते में हमने खरदुंगाला दर्रा पार किया, जो दुनिया के सबसे ऊंचा मोटर सक्षम दर्रा है जो लगभग 18,000 फीट से अधिक ऊंचाई पर स्थित है । खरदुगला से अंदर की ओर उतरना पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है क्योंकि बर्फ़ीला परिवेश तेज़ी से रेगिस्तान में बदल जाता है । डबल कूबड़ वाले ऊंट हमको रेगिस्तान के माध्यम से एक रोमांचक सवारी प्रदान करते हैं । लद्दाख के पर्यटकों को बर्फ से ढकी चोटियों, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाके, शांत झीलों, ठंडे रेगिस्तान, शक्तिशाली नदियां और स्मरणीय बौद्ध विरासत और प्राकृतिक उपहारों के विभिन्न अनुभवों से अवगत कराया जाता है ।

पाँचवे दिन सुबह हमने नुब्रा से पैंगोग झील के लिए यात्रा शुरू की । सड़कें खामोश थी, कुछ जगहों पर बहुत अच्छी तरह से विकसित नहीं थी। दोपहर तक हम पैंगोग पहुँच गए । झील की खूबसूरती को बयां करना मुश्किल है । झील अपना रंग बदलती रहती है और अलग-अलग रंग दिखाती है । प्रसिद्ध बॉलीवुड फिल्म थ्री इडियट्स की शूटिंग पेंगोग झील के किनारे ही की गई थी । रात को हम पैंगोग में ही रूक गए और रात के दौरान तापमान वास्तव में बहुत ही ठंडा था । अगले दिन सुबह हम लोग पेंगोग से लेह के लिए रवाना हुए । लगभग 7-8 घंटे की यात्रा है पैंगोग से लेह की । लेह लौटते समय हम लोग चांगल दर्रे को पार किए और भारी बर्फबारी भी देखने को मिली । रास्ते में लगभग सभी स्थानों पर सेना के शिविरों ने सुरक्षा का पूरा प्रबंध किया । दोपहर 3 बजे हम लेह पहुँच गए ।

लेह में हमें कुल मिलाकर आधा ही दिन घूमने का अवसर मिला । उसमें रॉयल लेह पैलेस बीते युग की भव्यता को प्रदर्शित करता है । लेह और लद्दाख में ऑक्सीजन की कमी से बुरी तरह से प्रभावित हुए और हमारे कई सदस्यों को अतिरिक्त ऑक्सीजन की व्यवस्था करना पड़ा । 7 दिन की यात्रा पूरी करके 8वे दिन हम लद्दाख के शानदार दृश्य अनुभव करके वापस त्रिवेंद्रम के लिए रवाना हुए ।

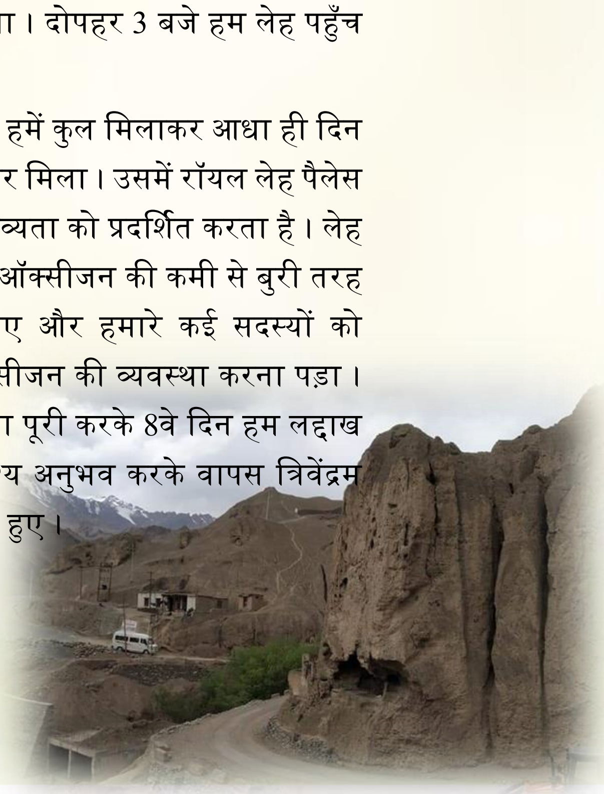

सजीव कुमार एन (सं.1)
सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रश्नोत्तरी

मैं आठवी कक्षा का छात्र था। शुरू से ही मुझे प्रश्नोत्तरी का शौक था और मैं इसके आयोजन से संबंधी कोई भी प्रतियोगिता में भाग लेने का मौका नहीं छोड़ता था। वैसे QUIZ शब्द का पूर्णनाम- Q:Quest- खोज, U:Universe- ब्रह्मांड, I:Intelligence- बुद्धि, Z:Zenith- शीर्ष बिन्दु से है। उन दिनों हमारे इलाके में कई समानान्तर ट्यूटोरियल थे। सत्र पूरा होने पर विश्वविद्यालय में एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता रखी गई। उत्सुकतावश मैंने भाग लिया और पहली ही बार में प्रथम स्थान प्राप्त किया और एक पुस्तक भी पुरस्कार के साथ दी गई।

अगले सत्र में आत्मविश्वास के साथ दोबारा इस प्रतियोगिता में भाग लेने का फैसला किया। दस पन्द्रह प्रश्न थे। सभी प्रश्नों का उत्तर दिया। इस यकीन के साथ कि सभी उत्तर सही थे। परंतु परिणाम आने पर मुझे पता चला कि विजेता सूची से मेरा नाम नदारद है, तुरंत मैं ट्यूटोरियल के कार्यालय से संपर्क किया वहां मैंने देखा कि मेरी उत्तरपुस्तिका मुड़ी हुई कचरे के डिब्बे में पड़ी है। मैंने उसे निकालकर साफ किया और प्राचार्य महोदय से संपर्क किया उन्हें एक-एक प्रश्न का उत्तर दिखाकर दोबारा अपने उत्तरों की जांच करवाई परिणामस्वरूप मेरा नाम प्रथम स्थान पर आया।

मुझे अतिथि माननीय श्री रवरन्ड मार ग्रिगोरियस के हाथों से ‘चुक्कम गेक्कुम’ नामक एक सोवियत कहानी की पुस्तक पुरस्कार के तौर पर प्रदान की गई। उस दिन मैं अपने जीवन के दो उसूलों से रूबरू हुआ- एक जो आपका है, आपको मिलकर रहेगा और दूसरा सब्र से काम करने से सब कुछ अच्छा होता है।

शशि कुमार
लेखापरीक्षक

ज़िंदगी

दो पल की ज़िंदगी है,
आज बचपन कल जवानी...
परसों बुढ़ापा फिर खत्म कहानी है ।
चलो हंस कर जिएं चलो खुलकर जिएं...
फिर ना आने वाली यह रात सुहानी,
फिर ना आने वाला यह दिन सुहाना,
कल जो बीत गया वो बीत गया...
क्यों करते हो आने वाले कल की चिंता ।
आज और अभी जियो दूसरा पल हो ना हो
आओ, ज़िंदगी को गाते चलें...
कुछ बातें मन की करते चलें,
रूठों को मनाते चलें...
आओ, जीवन की कहानी प्यार से लिखते चलें...
कुछ बोल मीठे बोलते चलें...
कुछ रिश्ते नए बनाते चलें...
क्या लाए थे, क्या ले जाएंगे
आओ, कुछ लुटाने चलें...
आओ, सब के साथ चलें...
ज़िंदगी का सफर यूं ही काटते चले...

श्रीमती बबिता
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

(ग्रामीण भारत का एक नागरिक जब शहरी भारत में आ बसता है तो पीछे बहुत कुछ छोड़ आता है... उसके भीतर के द्वन्द और अभिलाषा को जताने की कोशिश ये कविता है)

कुछ गाँव अधूरे बसते है

दूर शहर के रस्ते से,
कुछ गाँव अधूरे बसते हैं,
नहर पर पड़ती धूप छाँव से,
सरक निकले जो पाँव गाँव से,
अब वापस जाने को तरसते हैं...
इस शहर से दूर, जहाँ गाँव अधूरे बसते हैं ।।

जहाँ सूरज की गर्मी ठंडक थी,
बगल में गंगा -कोसी -गंडक थी,
जरा तैरते थे, पानी ज़रा चखते थे...
अब वापस जाने को तरसते हैं,
इस शहर से दूर, जहाँ गाँव अधूरे बसते हैं ।।

उस पार यार सब सड़क के छूट गए,
कुछ भूल गए कुछ रूठ गए,
दफ़्तर में जैसे ही बस्ता रखते हैं,
अब वापस जाने को तरसते हैं,
इस शहर से दूर,जहाँ गाँव अधूरे बसते हैं ।।

ज़िम्मेदारियों का बोझ लिए गली-गली,जैसे बुलबुल जोहे घर की डाली...
हम जुगनू बंजारों से भटकते हैं,
अब वापस जाने को तरसते हैं,
इस शहर से दूर, जहाँ गाँव अधूरे बसते हैं ।।

कई बरस बीते आखिर इक मांद बनी,
कमर तोड़ मेहनत के बाद बनी,
नित हंसी झूठी जिसमें हँसते हैं,
अब वापस जाने को तरसते हैं,
इस शहर से दूर, जहाँ गाँव अधूरे बसते हैं ।।

अब दोस्तों/परिजनों की यादों का सहारा है ,
सुख पार क्षितिज के किनारा है,
सूनापन है दरिया, डूब रोज़ गहराई परखते हैं,
अब वापस जाने को तरसते हैं,
इस शहर से दूर, जहाँ गाँव अधूरे बसते हैं ।।

पगडंडी-तालाबों को तार लिखो,
न पहुंचे तो सौ बार लिखो,
क्या वो भी राह हमारी तकते हैं,
अब वापस जाने को तरसते हैं,
इस शहर से दूर, जहाँ गाँव अधूरे बसते हैं ।।

क्या यूँही दुनिया आँख से ओझल होगी,
कब हम मुर्दों में हलचल होगी,
ख़्वाबों के पथ चल पाँव अब थकते हैं,
अब वापस जाने को तरसते हैं ।।

श्रीमती विष्णुदेवी राजसेनन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हमारे कार्यालय में दक्षिणी-क्षेत्रीय क्रिकेट टूर्नामेंट

बचपन से ही क्रिकेट का मुझे बहुत शौक रहा है, और लाखों खेलप्रेमियों की तरह ये मेरा पसंदीदा खेल रहा है । किशोरावस्था में हम टीवी पर क्रिकेट मैच देखते थे । 80 के दशक में सभी घरों में टी वी नहीं होता था, और मुझे आज भी वो सुनहरे पुराने दिन याद हैं जब हम टीवी में मैच देखते थे, बेशक जिस घर में टी वी होता था वहां भीड़ होती थी और सभी एक साथ मैच का आनंद लेते थे । भीड़ में ज़्यादातर चचेरे भाई, पड़ोसी व करीबी रिश्तेदार आदि शामिल होते थे । वास्तव में यह एक परिवारिक मिलन समारोह की तरह था जिसमें बहुत शोर और तालियों की गड़गड़ाहट समाहित होती थी । यह वास्तव में हमारे लिए आनंद की बात होती थी ।

लेकिन बाद में शादी के बाद और पारिवारिक बोझ आदि के कारण क्रिकेट मैच देखने का जुनून और दीवानगी धीरे-धीरे कम होता गया । एक लंबे अंतराल के बाद मुझे क्रिकेट की अपनी सुनहरी यादों को ताज़ा करने का अवसर मिला, जिसका हमने अपने बचपन के दिनों में आनंद लिया था । जी हाँ, इस बार आई ए ए डी साउथ ज़ोन और इंटर ज़ोन क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन हमारे कार्यालय द्वारा किया गया था । सौभाग्य से, कल्याण अधिकारी का प्रभारी होने के नाते, मुझे टूर्नामेंट के आयोजन के साथ-साथ उसे देखने का सुअवसर भी मिला ।

क्रिकेट टूर्नामेंट की शुरुआत सोमवार की सुबह से हुई । आमतौर पर हमारे घर या कार्यालय में कोई भी नया काम शुरू करने से पहले मैं पष़वंगडी गणपति मंदिर जाती थी और नारियल फोड़ती थी । मैंने यह अभ्यास अपने पिता से सीखा जो गणपति के भक्त थे । ऐसी मान्यता है कि भगवान गणपति सभी बाधाओं को दूर करते हैं और वैसे ही बारिश का मौसम था, इसलिए हम सब थोड़े परेशान थे । टूर्नामेंट की शुरुआत उद्घाटन समारोह से हुई । उद्घाटन समारोह में हमारे सबसे सम्मानित अधिकारी प्रधान महालेखाकार/वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय मौजूद रहे । टूर्नामेंट की अवधि 5 दिनों की निर्धारित की गई थी । टूर्नामेंट में पूरे देश की टीमों ने भाग लिया । भले ही बारिश का मौसम था, लेकिन भारी बारिश के कारण केवल एक ही दिन अत्यधिक बाधित रहा ।

मुझे स्टेडियम में क्रिकेट मैच देखने का मौका मिला जो मेरा पहला अनुभव था । स्टेडियम में क्रिकेट मैच देखना एक शानदार अनुभव है । कोई भी इस माहौल में डूब सकता है, खेल के बारीक पहलुओं की सराहना कर सकता है क्योंकि कोई विज्ञापन न ही कोई विराम है । मुझे कमेंटेटर द्वारा की गई कमेंट्री की वास्तव में सराहना करनी चाहिए । वह कुछ दिल को छू लेने वाले मनोरंजक बातों के साथ एक नीरस मैच को भी दिलसचस्प बना सकता है । वह मुख्य ज़मीनी समर्थकों में से एक होता

है। यहां मैं उनकी बेहतरीन कमेंट्री के कुछ अंश प्रस्तुत कर रही हूं।

"रेवी तेजा (एजी, कर्नाटक के कप्तान) आज पूरे जोश में हैं"।

"अकील का चेहरा गुस्से से लाल"

"म.ले., केरल के कप्तान एम एस अकील अपने नाम के साथ और एमएस धोनी की तरह चेस्ट नंबर सहित"।

कमेंटेटर द्वारा अंतिम ओवरों के दौरान बोले गए जोश भरे शब्द कई बार बल्लेबाज़ी करने वाली टीम को मैच जीतने की रवानी खून में भर देते हैं।

साथ ही मैंने मैचों से बहुत सी अच्छी आदतें सीखीं जिन्हें हमें अपने जीवन में भी लागू करना चाहिए। यह खिलाड़ियों में अनुशासन, टीम भावना, साथी भावना और खेल भावना को प्रोत्साहित करता है। मैं एक घटना का वर्णन करना चाहती हूं, जब एक गेंदबाज़ ने बल्लेबाज़ का विकेट ले लिया और मैदान से बाहर जाते समय विरोधी टीम के कप्तान ने खिलाड़ी से हाथ मिलाया, इससे पता चलता है कि विपरीत टीम के साथ हमारा विरोध बस उस खेल तक है, हमें हमेशा विरोधी टीम के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रखना चाहिए। ज़्यादातर खिलाड़ी मैदान में प्रवेश करने से पहले मैदान को सम्मान स्वरूप प्रणाम करते हैं। यह उस मैदान के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है जहां वे खेलने जा रहे हैं। अंत में पराजित टीम के सभी खिलाड़ी विजेता टीम को बधाई देते हैं।

हमारी माननीय प्रधान महालेखाकार महोदया, वरिष्ठ उपमहालेखाकार महोदय और टूर्नामेंट के संचालन में शामिल अन्य सभी कर्मचारियों के पूर्ण सहयोग के साथ टूर्नामेंट का आयोजन वास्तव में एक शानदार अनुभव था और अंत में हमें मुख्य अंपायरों और देश के अलग-अलग हिस्सों से टूर्नामेंट में शामिल हुई सभी टीमों से सराहना मिली।

साउथ ज़ोन एवं इंटर ज़ोन क्रिकेट टूर्नामेंट

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
SOUTH ZONE & INTER ZONE CRICKET TOURNAMENT 2021-22

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
SOUTH ZONE & INTER ZONE CRICKET TOURNAMENT 2021-22
All Are Welcome
WINNERS

AN AUDIT AND
TS DEPARTMENT
ONE & INTER ZONE
URNAMENT 2021-22
St. Xavier's College Ground, Thumba
KCA-Cricket Ground, Mangalapuram,
Thiruvananthapuram
From 16-05-2022 to 21-05-2022
Are Welcome

AG MAHARASHTRA
AG GUJARAT
AG ODISHA
AG WEST BENGAL
AG TAMILNADU

INDIAN AUDIT AND
ACCOUNTS DEPA ENT
IA & AD CRICKET TOURNAMENT 2021-22
THIRUVANANTHAPURAM
CHAMPIONS

सुनीता कुमारी
पत्नी शशि कुमार
लेखापरीक्षक

बिहार

बिहार राज्य भारत के एक महत्वपूर्ण राज्यों में से है यह राज्य भारत के उत्तर पूर्व में एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक जगह पर स्थित है जिसकी राजधानी पटना है बिहार जनसंख्या की दृष्टि से तीसरा सबसे बड़ा प्रदेश है और क्षेत्रफल में भारत का बारहवां राज्य है। 15 नवंबर 2000 को बिहार के दक्षिणी हिस्से को अलग करके एक नया राज्य झारखंड के नाम से बनाया गया है।

इस राज्य की सीमा तीन अंतर्राज्य और एक अंतरराष्ट्रीय सीमा से मिलती है। इसके पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश, दक्षिण में झारखंड और उत्तर में नेपाल है एक अंतरराष्ट्रीय सीमा प्रत्येक राज्य का अपना एक विशिष्ट महत्व होता है उसी तरह बिहार का भी अपना एक अलग महत्व है। यहां की भौगोलिक स्थिति अद्भुत है यह क्षेत्र गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों पर बसा है जिसके कारण यहां की भूमि काफी उपजाऊ है यहां गंगा पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है बिहार भारत के महान राज्यों में से एक है लेकिन सिर्फ बात उपजाऊ मिट्टी की नहीं।

यहां अनेक प्रकार की फसल उगाई जाती है। बिहार का इतिहास बहुत गौरवशाली इतिहास रहा है। यहां कई साम्राज्य की स्थापना हुई जिन्होंने पूरे भारत और भारत से बाहर भी अपनी जीत का पताका लहराया। यहां के शासकों में हैं- मौर्य व गुप्त साम्राज्य जिनके बलशाली राजा हुए हैं जैसे चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक। राजा भोज ने अपना साम्राज्य भारत से बाहर भी पहुंचाया। इसके बाद एक और बलशाली साम्राज्य गुप्त साम्राज्य की स्थापना श्री गुप्त ने की थी। इन्हीं के वंशज समुद्रगुप्त थे जिन्होंने आर्यव्रत के शासकों और दक्षिणावर्त के शासकों को हराया था और उनके समय में साम्राज्य सुदूर स्थान तक रहता था।

यहां ऐसे अनेक शासक हुए जिन्होंने अपनी वीरता का लोहा सारी दुनिया में मनवाया। बिहार की भूमि से ऐसे बहुत सारे वीरों ने जन्म लिया जिन्होंने इस देश का भी नाम रोशन किया और गुप्त शासकों में से कुमार गुप्त ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसकी कीर्ति पूरे भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में फैली और देश-विदेश से लोग वहां आए और शिक्षा ग्रहण कर दुनिया में शिक्षा को फैलाया बिहार से कुछ आध्यात्मिक लोग भी हुए जिन्होंने अपना प्रकाश फैलाया और शांति के रास्ते पर चलने के लिए लोगों को प्रेरित किया जैसे महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध। इन्होंने अपने ज्ञान की रौशनी से सारी दुनिया को नेक राह दिखाई।

कुछ स्वतंत्रता सेनानी भी हुए जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपना जी जान लगा दिया। राजेंद्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति बिहार से ही थे। यहां कई भाषाएं बोली जाती हैं जैसे-हिंदी, भोजपुरी, मैथिली, उर्दू। बिहार में बिहारी भोजन के रूप में लिट्टी चोखा को विश्व स्तर पर पहचान मिली हुई है। बिहार के लोग ज़्यादातर शाकाहारी खाना पसंद करते हैं और सादा-सात्विक भोजन ही रहता है। वर्तमान में बिहार की स्थिति खराब हो चुकी है या गरीबी बेरोज़गारी आदि अपनी जड़ें जमा चुकी है।

हिंदी को नए आयाम देता दक्षिण भारतीय सिनेमा

रोहित कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हमारे देश में सिनेमा के विविध रूप हैं । देश-विदेश में हिंदी सिनेमा की अपनी अलग पहचान तो लंबे समय से रही ही है लेकिन दक्षिण भारतीय सिनेमा ने भी अपने आप को बुलंदी के नए मुकाम पर पहुचाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है और इसका सबसे ज़्यादा फ़ायदा हमारी हिंदी भाषा को मिला है ।

अब बदलते वक़्त के साथ साउथ इंडियन फिल्में भी पूरे देश (ख़ासतौर से हिंदी भाषी राज्यों में) ही नहीं बल्कि विदेश में भी अपनी बेहतरी का लोहा मनवा रही हैं । एक लम्बे अर्से तक तमिल, मलयालम, कन्नड़, तेलुगू सिनेमा की पहुंच क्षेत्रीय आधार पर ही रही है लेकिन वैश्वीकरण के दौर ने इस क्षेत्रीयता की सीमा को तोड़ते हुए दुनियाभर में ख्याति पाई है । दक्षिण भारतीय मनोरंजन उद्योग में सुपरस्टार रजनीकांत, कमल हासन, वेंकटेश, अरविंद स्वामी, मम्मूटी, मोहनलाल, अल्लु अर्जुन, पृथ्वीराज सुकुमारन जैसे दिग्गज अभिनेताओं ने अपने अभिनय से दुनियाभर का दिल जीता और अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी सिनेमा में भी अपना नाम रौशन किया, इससे दक्षिण भारत में भी हिंदी का अपने आप प्रचार-प्रसार होने में बहुत मदद मिली ।

अगर हम संगीतकारों की बात करें तो ए आर रहमान का नाम सबसे पहले आता है जिन्होंने भारत भर में ही नहीं बल्कि विश्व विख्यात ऑस्कर अवार्ड जीतने में भी सफलता पाई । उनके बनाए गीत हमेशा ही आम जनता के दिलों पर राज करते आए हैं । वंदे मातरम, मां तुझे सलाम के अलावा ‘दिल से’ फिल्म का ‘ऐ अजनबी’ बेहतरीन गीत माना जाता है । यहां तक कि ‘जिया जले जां जले’ गीत में उन्होंने अभिनव प्रयोग किया और तमिल, मलयामल और हिंदी तीनों ही भाषाओं को एक ही गीत में समाहित करके कमाल का गीत बनाया और वो आज भी अपने आप में अनोखा है ।

फिल्म मारी 2 के ‘राउडी बेबी’ गीत को तो 1 बिलियन व्यूस मिले हैं । हालांकि ये अहिंदी गीत था लेकिन इसे सबने पसंद किया, इसे अपने अनोखे फिल्मांकन के लिए लोग बार बार देखते हैं और उसका आनंद लेते हैं.. व्हाय दिस कोलावरी डी..तो आपको याद ही होगा । इस सबका ज़िक्र करने का एक ही उद्देश्य है कि देश को एकता के सूत्र में बांधने का बेहतरीन काम हमारे सिनेमा ने किया है और जितना दक्षिण का सिनेमा तरक्की करेगा हिंदी को उतना ही फायदा होगा साथ ही ये आर्थिक रूप से भी फिल्मकारों के लिए फायदेमंद होगा । पहले सभी साउथ इंडियन फिल्में वहां के निवासियों को ध्यान में रखकर ही बनाई जाती थीं जिनका हिंदी फिल्म जगत यानि बॉलीवुड से कोई मतलब नहीं था लेकिन नए अभिनेताओं ने अपनी कड़ी मेहनत के बल पर अपने आपको बॉलीवुड में सिरमौर बनाया ।

इसके कुछ बेहतरीन उदाहरण हैं प्रभास, जूनियर एन टी आर, रामचरन । बाहुबली ने हिंदी भाषा को सीखने की एक ललक पैदा की और हरेक की ज़बान पर बस एक ही सवाल था ‘कटप्पा ने बाहुबली को क्यों मारा?’ उसके बाद हाल ही में बड़े पर्दे पर अपना जादू बिखेरने वाली ‘आर आर आर’ ने तो सफलता के नए झंडे गाड़े, दक्षिण भारतीय सिनेमा को बॉलीवुड का बादशाह बना दिया। मणि रत्नम, शंकर, ए आर मुरुगादास ने अपने जादूई निर्देशन से बेहतरीन फिल्में बनाईं जिनके एक्शन और संस्पेंस को देखकर दर्शक दांतों तले उंगली दबाने को मजबूर हो जाते हैं । अहिंदी क्षेत्र से होकर हिंदी भाषा में इतना उत्कृष्ट प्रदर्शन करना काबिले तारीफ़ है । हिंदी को नए आयाम तक पहुंचाने में इन सबका योगदान बहुमूल्य है ।

रक्षाबंधन

रश्मि शशिकुमार
वरि. पर्यवेक्षक

विविध संस्कृतियों, रीति-रिवाजें, परंपराएं और त्योहारें भारत की विशेषता है । भारत में हिंदुओं द्वारा मनाया जाने वाला राखी एक ऐसा त्योहार है, जो एक भाई और बहन के बीच प्रेम के शाश्वत बंधन का प्रतीक है । रक्षा बंधन या 'राखी', श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है । हिंदुओं के बीच लोकप्रिय यह त्योहार आज सभी धर्मों के लोगों के बीच मनाया जाता है । रक्षा बंधन या राखी बंधन को एक पवित्र और शुभ उत्सव माना जाता है । इस पर्व को उत्तर भारत में श्रावणी के नाम से भी जाना जाता है । यह उत्सव बहन-भाई के प्रेम की उदात्त पवित्रता के साथ-साथ मातृत्व, स्नेह और मिलन का भी पर्व है।

रक्षाबंधन उत्सव के पीछे कई कहानियां हैं । उनमें से सबसे महत्वपूर्ण कहानी ये है - मकर संक्रांति के दिन, भगवान कृष्ण ने गन्ना काटते समय अपनी छोटी उंगली काट ली । तेज़ी से खून बहने लगा । रुक्मणी और द्रौपदी उनके पास थीं। रुक्मणी ने परिचारक को चोट पर पट्टी बांधने के लिए भेजा । लेकिन द्रौपदी ने अपने पहने हुए कपड़े का एक सिरा फाड़ दिया और उसे भगवान कृष्ण की उंगली पर रख दिया । भगवान कृष्ण प्रसन्न हो गये और उन्होंने द्रौपदी से वादा किया कि मैं किसी भी समय आपकी मदद करने के लिए तैयार रहूंगा । इसी वचन का परिणाम था कि जब कौरवों की सभा में द्रौपदी का वस्त्र छीना गया तो वस्त्र आते रहे और द्रौपदी बिना वस्त्र के नहीं रही। रक्षाबंधन इसी रक्षा की स्मृति है ।

राखी एक सुंदर रक्षा सूत्र है जो रंगीन धागों से बना होता है और खूबसूरती से फूलों और कई अन्य चीज़ों से सजाया जाता है । वे छोटे और बड़े आकार में, कई रंगों में और विभिन्न कीमतों पर उपलब्ध हैं । बाज़ार में सोने, चांदी, रुद्राक्ष आदि से बनी राखियां भी मिलती हैं । लोग अपने वित्त, पद और प्रतिष्ठा के अनुसार राखी खरीदते हैं । रक्षा बंधन के दिन बहन अपने भाई के पास मिठाई की थाली और रक्षा सूत्र लेकर, दिया जलाकर, तिलक लगाकर, मिठाई देती हैं, लंबी उम्र और सौभाग्य की प्रार्थना करती हैं और उसकी कलाई पर राखी बांधती हैं । बदले में, भाई उपहार या पैसे देते हैं और हमेशा के लिए उसकी रक्षा करने का वादा करते हैं । यदि महिला से रक्त संबंध नहीं भी हैं तो भी राखी बांधने के बाद पुरुष व महिला के बीच भाई-बहन का रिश्ता जुड़ जाता है ।

320 ईसा पूर्व में सिकंदर और राजा पुरु के बीच ऐतिहासिक लड़ाई शुरू होने से पहले, सिकंदर की प्रेमिका ने बचाव बंधन को सीखते हुए, पुरु से संपर्क किया, उसकी कलाई में राखी बांधी, उसे अपना भाई बनाया, और कसम खाई कि वह सिकंदर को लड़ाई में नहीं मारेगा । पुरु राजा ने अपना वादा निभाया । इसी के साथ ये उत्सव और मशहूर हो गया।

16 अक्टूबर 1905 को भारत के तत्कालीन वायसराय कर्जन ने धर्म के आधार पर बंगाल को दो भागों में बांट दिया । बंगाल के विभाजन ने राष्ट्र को विभाजित किया और इसकी अखंडता को खतरा उत्पन्न हुआ । नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने बंगाल के हिंदुओं और मुसलमानों के बीच प्रेम और एकता के बंधन को मज़बूत करने और आपसी संघर्ष से बचने के लिए रक्षाबंधन महोत्सव का आह्वान किया। हज़ारों हिंदू और मुसलमान कलकत्ता और ढाका से शांति निकेतन आए । उत्सव एक जन आंदोलन में बदल गया । राखी एक धार्मिक समारोह से परे एक सामाजिक प्रतीक बन गया है । आज भी शांति निकेतन के छात्र विश्वविद्यालय के अन्य छात्रों, पड़ोसियों और आम जनता को मित्रता के संदेश के साथ राखी बांधते हैं और त्योहार मनाते हैं । रक्षाबंधन पवित्र रिश्तों का त्योहार है । महिलाओं पर होने वाले उत्पीड़न और हमलों की स्थिति में आज के समाज में इस अनुष्ठान की प्रासंगिकता है ।

मैथिली जे आर
सुपुत्री राखी पी ओ,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्यार की सही परिभाषा

जिस क्षण मैंने महसूस किया कि प्यार एक पिता के बलिदान और एक माँ की देखभाल से पूरी तरह से परिभाषित होता है, दुनिया मुझे और अधिक सुंदर लगने लगी । जब आप अपने आपको खो देते हैं, जब आप कम महसूस करते हैं, यहां तक कि जब आप उन्हें अनदेखा करते हैं, तब भी माता-पिता आपके लिए खड़े होते हैं ।

हमें सोचने - समझने के काबिल उन्होंने ही तो बनाया है । उनके खून-पसीने ने ही हमें वो बने हैं जो हम आज है ।

यहाँ केवल एक ही बात मैं दुनिया को बता सकती हूँ, आप को बिना शर्त के प्यार केवल आपके माता-पिता ही दे सकेंगे । एक दिन वे बूढ़े हो जाएंगे, बच्चों की तरह बर्ताव करने लगेंगे..उन्हें कभी भी नज़रअंदाज़ न करें, क्योंकि आप कल के माता-पिता हैं.... आप भी कल उनके हाल में होंगे। जीवन में बच्चे की सफलता के लिए माता-पिता का प्यार महत्वपूर्ण है । उनका प्यार और आशीर्वाद ही आपकी सफलता की आधार शिला है।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ने सन् 1938 में एक विशेष अध्ययन किया था ताकि यह पता लगाया जा सके कि सफल लोगों की परवरिश कैसे की जाती है ।

हार्वर्ड ग्रांट स्टडी, इस तरह का पहला अध्ययन था । इस अध्ययन में जॉन एफ कैनेडी सहित 268 हार्वर्ड छात्रों के 70 साल के प्रक्षेप वक्र को ट्रैक किया गया था । प्रत्येक प्रतिभागी के शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को दर्ज किया गया और उनकी सफलताओं या विफलताओं या अभावों का विश्लेषण किया गया ।

माता-पिता के साथ अच्छे संबंध में ही सुखी और सफल जीवन निहित है । जो बच्चे माता-पिता के प्यार, ममता और वात्सल्य से पले-बढे होते हैं, एक सफल, खुश तथा संतुष्ट वयस्क होने की संभावना उनकी अधिक रहती है । अगर आप आज एक खुशहाल और कामयाब इंसान है तो उसमें आपके माता- पिता का योगदान काफी बड़ा है । अत: हमेशा उनका आदर - सम्मान करें, उनकी वैसी ही देख-भाल करें जैसे उन्होंने आपकी की थी ।

कोशिश

श्रीमती उषा बर्टी
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

भानु खुशी से मुस्कराते हुए पोडियम पर खड़ी हो गई । प्रिंसिपल ने अभी-अभी तैराकी प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा की थी और उन्हें 3 स्वर्ण पदक के साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला घोषित किया था । पूरा स्कूल उनके लिए ताली बजा रहा था। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था ।

“भानु,भानु... क्या शर्म नहीं आती तुम्हें....मुझे कक्षा में छात्रों को सोते हुए देखना अच्छा नहीं लगता । बेंच में खड़े हो जाओ और क्लास के बाद स्टाफ रूम में मुझसे मिलो ।” गुस्से में सुरभि टीचर को देखकर वह जाग गई । भानु बेंच पर खड़ी हो गई और उसने अपने सहपाठियों को उस पर हंसते देखा ।

उसने मन ही मन सोचा "कुछ मिनट पहले मैं खुशी-खुशी बधाई पाने का सपना देख रही थी... लेकिन अब हमेशा की तरह मुझे अपमानित किया जा रहा है... मैं पूरी तरह से असफल हूं..." उसकी आंखों में शर्म आंसू भर आए ।

भानु हमेशा से बहुत महत्वाकांक्षी रही हैं, लेकिन वह अपने जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर पाईं। बचपन में अपनी माँ को खोने के बाद, उनका पालन-पोषण उनके दादा-दादी ने किया, जो उनके बारे में बहुत अधिक चिंतित थे कि उन्हें बाहर खेलने या दोस्तों के साथ घूमने की अनुमति नहीं थी । इस प्रकार वह एक अंतर्मुखी बन गई, उसने किताबों और कहानियों में आराम लिया, जो उसके दादा-दादी ने उसे बताया था ।

उसके पिता जो श्रीनगर में काम करते थे और उन्हें केवल वार्षिक छुट्टियां ही मिलती थीं । वह जब भी आता,उसे बहादुर और स्मार्ट बनने के लिए प्रेरित करता था । वह वास्तव में अपने पिता की उम्मीदों पर खरा उतरना चाहती थी, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकी । उसने अपने सपनों में केवल अपने पिता की इच्छाओं को पूरा किया ।

घंटी बजी और भानु सुरभि टीचर के पीछे कक्षा में गयी जैसे मेमने को बूचड़खाने में ले जाया जा रहा हो । वह जानती थी कि उसके सभी शिक्षकों के सामने उसका मज़ाक उड़ाया जाएगा । लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि टीचर उसे काउंसलर के पास ले गई और अगले एक घंटे तक दोनों ने उसे अपनी चिंताओं और आशंकाओं के बारे में खुलकर बात करने के लिए प्रोत्साहित किया । उसकी कहानी सुनने के बाद, टीचर ने कहा, “भानु, मैं तुम्हें असाइन्मेंट देने जा रही हूँ । हमारे विद्यालय में अगले माह अंतर-विद्यालय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया जाना है । इसके लिए हमें कुछ स्वयंसेवकों

की आवश्यकता है। क्या आप आयोजन समिति का नेतृत्व कर सकती हैं? इसके बारे में सोचकर दो दिनों में मुझे बताओ।

भानु हैरान और खुश दोनों थी। एक ओर तो वह उत्साहित और रोमांचित थी, लेकिन साथ ही वह भय से जकड़ी हुई थी। ... क्या इसे मैं कर पाऊँगी ?

अगले दो दिनों तक वह ठीक से सो नहीं पाई। उसके मन में अनेक विचार घूम रहे थे। मैं नेतृत्व की भूमिका कैसे निभा सकती हूं? अगर मुझे अपमानित किया जाए तो क्या होगा? क्या मुझे पीछे हटना चाहिए?

तीसरे दिन जब वह स्टाफ रूम में गई, तो उसने असाइनमेंट स्वीकार नहीं करने का फैसला किया था। उसने झूठ बोलने की योजना बनाई थी कि उसके पिता छुट्टी पर आने वाले हैं और वह अपने पैतृक स्थान जा रही है। टीचर बातचीत शुरू करने ही वाली थी कि चपरासी आया और कहा कि प्रिंसिपल उनसे मिलना चाहते हैं। उन्होंने भानु से उनकी प्रतीक्षा करने को कहा। तो भानु स्टाफ रूम में बैठ गई और उसकी नज़र एक मैगज़ीन पर पड़ी। वह बस पन्ने पलट रही था और उसकी नज़र एक खूबसूरत सुविचार पर पड़ी

"यदि आप कोशिश करते हैं और असफल होते हैं, तो यह क्षमा योग्य है"

लेकिन अगर आप बिल्कुल भी कोशिश नहीं करते हैं तो यह क्षमा योग्य नहीं है

अपने रास्ते में आने वाले हर अवसर का उपयोग करें

असफलता से डरे बिना"

वे शब्द उसके दिल में गहरे उतर गए। उसने मन ही मन सोचा "मैं बिना कोशिश किए भी पीछे हटने के लिए इतनी कायर कैसे हो सकती हूँ? भानु... इस अवसर को हाथ से जाने न दें।" जब टीचर वापस आई, तो उसने असाइनमेंट स्वीकार करने की इच्छा व्यक्त की।

उसके बाद के दिन भानु के लिए बहुत व्यस्त थे। चर्चा, परिवहन की व्यवस्था, खानपान की व्यवस्था.. उसके पास करने के लिए बहुत कुछ है। अंत में विज्ञान प्रदर्शनी का निर्धारित दिन आ ही गया।

उसने अन्य स्कूलों के छात्रों को रेलवे स्टेशन से लाने के लिए बसों की व्यवस्था की थी। आवास तैयार था, समय पर भोजन परोसा गया, चिकित्सा आपातकालीन कक्ष तैयार था। तीन दिन एक झटके की तरह निकल गए। समापन समारोह और पुरस्कार वितरण ही शेष बचा था।

भानु के स्कूल ने विज्ञान प्रदर्शनी के लिए केवल तीसरा पुरस्कार प्राप्त किया था, लेकिन पूरे आयोजन के अद्‌भुत आयोजन के लिए हर कोई प्रशंसा से भरा था। मुख्य अतिथि विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती गीता देवी थीं, जिन्होंने विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था।

भानु मंच के पीछे यह सुनिश्चित कर ही रही थी कि सभी ट्राफियाँ और प्रमाण पत्र तैयार थे। अचानक उसने सुना कि कोई उसका नाम पुकार रहा है। मुख्य अतिथि उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहते थे। उसे मंच पर बुलाया गया था। श्रीमती गीता देवी ने उन्हें धीरे से अपने कंधों पर थपथपाया और छात्रों को संबोधित किया। "हमारा स्कूल इस साल की विज्ञान प्रदर्शनी का विजेता बनकर खुश है... मैं पिछले तीन दिनों से उन्हें देख रहा हूं और मैं आप छात्रों को बताना चाहता हूं कि भानु हम सभी के लिए एक आदर्श हैं। श्रीमती गीता देवी ने भानु को फूलों का एक गुलदस्ता भेंट किया और सभी छात्र उनके लिए ताली बजाते हुए खड़े हो गए।

भानु उत्साहित और रोमांचित होकर मंच से नीचे उतर गई कि आखिरकार वह अपने पिता की उम्मीदों पर खरी उतरी। उसका इंतज़ार कर रही सुरभि टीचर ने उसे गले से लगा लिया।... कहीं न कहीं उसके विचारों में भानु को याद आया कि उसकी माँ उसे प्यार से गले लगा रही थी।

निजी क्षेत्र की समस्या

मालविका जे आर
सुपुत्री राखी पी ओ,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रमिकों के शोषण को रोकने की दृष्टि से, सरकार समय-समय पर श्रम कल्याण के ढेर सारे कानून लेकर आती है। उदाहरण के लिए न्यूनतम मज़दूरी अधिनियम, मज़दूरी का भुगतान अधिनियम, दुकान और स्थापना अधिनियम, उपदान अधिनियम, बोनस अधिनियम, कारखाना अधिनियम, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, भविष्य निधि अधिनियम, ट्रेड यूनियन अधिनियम, औद्योगिक विवाद अधिनियम आदि अनेक नियम हैं जो सरकार द्वारा पेश किए गए हैं।

इस प्रकार, प्रावधानों के तहत किसी भी कर्मचारी को दिन में 8 घंटे से अधिक ड्यूटी पर नहीं लगाया जा सकता है और वह भी 4 घंटे के अंतराल पर कम से कम आधे घंटे के विश्राम के साथ और यदि कोई नियोक्ता किसी कर्मचारी को सेवा की अत्यावश्यकता पर 8 घंटे से अधिक समय तक काम पर रखता है, तो उसे उस विस्तारित अवधि के लिए ओवरटाइम शुल्क का भुगतान करना होगा। अनिवार्य रूप से एक कर्मचारी की नियुक्ति एक अनुबंध है, जिसके तहत अधिक विस्तृत स्टाफ नियमों, यदि कोई हो, के अलावा, नियुक्ति पत्र में पारिश्रमिक सहित सेवा की शर्तों को निर्धारित करना आवश्यक है। इसलिए यदि उपयुक्त निवारण तंत्रों का कोई उल्लंघन होता है तो संबंधित कर्मचारी ऐसी शर्तों को लागू करने के लिए स्वतंत्र है। यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि मूल रूप से एक कर्मचारी और नियोक्ता के बीच एक मालिक-नौकर संबंध मौजूद है और दोनों पक्षों से रोजगार की शर्तों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है। यदि कर्मचारी की ओर से कर्तव्य में कोई लापरवाही होती है, तो दोषी कर्मचारी के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई करना नियोक्ता का भी अधिकार है।

चूंकि श्रम कल्याण कानून लागू है, इसलिए जब भी कोई नियोक्ता शोषण का सहारा लेता है, तो एक श्रमिक अपनी शिकायत के निवारण के लिए स्थानीय श्रम आयुक्त से संपर्क कर सकता है।

श्रीमती राधिका टी वी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

तब्दीलियां

कितने तेज़ कुछ लोग अजनबी बन जाते हैं
थामती ऊंगलियां चिमटियों जैसा दर्द देने लगती है

कितने तेज़ मन में इंद्रधनुष रचानेवाले
काले घने बादल में रूप बदल लेते हैं
बौछार के बाद वो जब थम जाते हैं
अंदर ही अंदर जाने कितने घाव जल उठने लगते हैं.........

कितने तेज़ उनकी कभी न खत्म होने वाली बातें
बेरुखी में बदल जाती है
लफ़्ज़ों की चाबी कहीं खो देते हैं
छुप्पी में अपने आप को चुपा लेते हैं

कितने तेज़ उनके मन ऊब जाते हैं उन कहानियों से
जो पहले बड़े चाव से सुना करते थे....
खामोशियों में जवाब पाकर
सवालें दम घुटकर मर जाने लगते हैं

कितने तेज़ वो राही अनजान बन जाते हैं
जिनके लिए आंखें रस्ते पे बिछाए खड़े रहते थे
कितने तेज़ आंखों के चमकते तारे
कूड़ेदाने के कचरों में फेंके जाते हैं

कितने तेज़ उन अरमानों की नीलामी की जाती है
जो पहले दिल में संजोके रखे थे
कितने तेज़ वो उन सपनों की जगह
खालीपन से भर देते हैं

कितने तेज़ जो जान बन बैठे थे
जान ही निचोड़के चले जाते है
मन की गहराईयों में दीवानगी का बीज
रोपकर गायब हो जाते हैं.........

श्री अनुराग शुक्ला
लेखापरीक्षक

नुस्खा

क्या आप बता सकते हैं, वह कौन-सी चीज़ है, जो एक समय में हमारे दादी-बाबा को एकल विरासत होती थी, मगर आज वह नायाब हुनर हम सभी के नरकश में है । कमाल तो यह है कि एक-दो नहीं इस हुनर की पूरी फौज है हमारे पास....? जी हां । आप बिल्कुल सही सोच रहे हैं, वह बेशकीमती वस्तु है नुस्खा । यदि आप मोबाइल के शौकीन हैं और डिजिटल मीडिया में तनिक भी रूचि रखते हैं तो फिर सुबह उठते ही मोबाइल का दीदार करने से शुरु होकर सारा दिन इन दुर्लभ नुस्खों की आवाजाही लगी रहती है ।

जी हां ! नाना प्रकार के, किस्म-किस्म के नुस्खें, विभिन्न विषयों से संबंधित । अब चाहे वह रक्तचाप व मधुमेह नियंत्रित करने का ज्ञान हो, सुखमय जीवन जीने के उपाय हो, एक हफ्ते में बिना व्यायाम के वजन कम करने की सलाह हो, पेट-दर्द, कमर-दर्द आदि का त्वरित इलाज हो या फिर काले घने बाल करने का बेजोड़ तरीका हो, सभी का लिंक आपके सामने उपलब्ध करा दिया जाता है । किसी भी फल, सब्जी या खाद्य पदार्थ का गुणात्मक विवरण आपके समीप होता है । कोविड काल में तो इम्युनिटी बढ़ाने के असंख्य उपायों से आपका साक्षात्कार अवश्य ही हो चुका होगा । यदि आप इन सभी नुस्खों का शत-प्रतिशत अनुसरण कर सके तो इसमें कोई संशय नहीं कि आप अमर होने का अत्यंत जटिल राज़ भी प्राप्त कर सकेंगे ।

नहीं-नहीं ! मेरा अभिप्राय किसी का उपहास करना कदापि नहीं है । निश्चित ही जो कोई भी आपको यह नुस्खें प्रवाहित करता है, वह आपका शुभचिंतक ही होगा । मेरा बिंदु बस इतना है कि समय और विज्ञान की प्रगति के परिणाम स्वरूप हमारे जीवन में पहले की तुलना में कहीं ज्यादा सुविधाओं का आगमन हुआ है । मगर क्या आपने कभी महसूस किया है कि बावजूद इसके हमारे जीवन की जटिलताएं कहीं अधिक गंभीर हो गई हैं और चाहे अनचाहे एक निराकार आफत ने हम सभी को अपने वश में कर लिया है । मेरा अभिप्राय तनाव से था । मैं आंकड़ों पर नहीं जाऊंगा, मगर चुपचाप यह तनाव रूपी भेदिया हम सभी के जीवन में घर कर चुका है । मज़े की बात तो यह है कि इस भेदिये को भगाने का सौ प्रतिशत कामयाब नुस्खा भी आपके पास अब तक अवश्य पहुंच चुका होगा ।

उम्र ढलने के साथ-साथ न चाहते हुए भी हम सभी का स्वाभाविक परिवर्तनों से साक्षात्कार होता है। अब चाहे वह सफेद बालों का आगमन हो, हल्का-फुलका पेट निकलना हो या फिर चेहरें की झुर्रियां हो, धीरे-धीरे ही सही मगर इनका आगमन तय होता है । जो काम हम कल कर सकते थे, शायद आज वह संभव न हो। जैसा हम कल दिखते थे वह लाख प्रयासों व नुस्खों के उपरान्त भी संभव नहीं हो पाता । मगर इन सब के परे यह जो मानव-जीवन हमें प्राप्त हुआ है, वह अपने आप में

कहीं ज्यादा अनमोल है । वर्तमान के अत्यंत चुनौतिपूर्ण युग में शायद सबसे दुष्कर कार्य है- खुश रहना और निश्चित ही यह कला कोई नुस्खा तो हमें नहीं ना सीखा सकता । अपितु यह कला तो हम सभी में निर्मित है, हमारा कर्म इस दीपक को प्रज्जवलित करता है । शायद कोई भी नुस्खा आपको खुश रहने की संजीवनी नहीं दे सकता । ईश्वर हम सभी का रचयिता है, अब जीवन वही दिखाएगा। आप तो बस अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिए और साथ में अगर किसी की सहायता कर सकते हैं तो बेझिझक कीजिए । ये क्यों हुआ ? ऐसा क्यों नहीं है ? मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है ? अब क्या होगा ? यह सारे के सारे प्रश्न, अनायास ही धीरे-धीरे आपके रक्तचाप व शुगर के स्तर में इज़ाफ़ा करेंगे तथा और भी कई प्रकार के विकार आमंत्रित होंगे, क्योंकि आप तनाव रूपी दानव को दावत दे चुके हैं । आत्म-संतोष भी मानव स्वभाव का एक अहम पहलू है, तनिक उस पर भी विचार कीजिए । जो मिला है, उसका शुक्रिया करना है, प्रसन्न होना है, सुधार का निरंतर प्रयास करना है । ध्यान, चिन्ता के विपरीत कर्म पर केंद्रित करना है, परिणामस्वरूप आप में पॉज़िटिव ऊर्जा का संचार होगा, आपका मन प्रसन्न होगा और प्रसन्न चित्त से बेहतर सूचक कुछ भी नहीं होता ।

अब बात नुस्खे की चल ही रही है तो लगे हाथ मैं भी एक छोटा-सा नुस्खा प्रवाहित किए देता हूं । उम्र का हर एक पड़ाव एक अलग तरह की खूबसुरती लेकर आता है । आप तो बस उसका आनंद लीजिए । क्या आपने कभी कयास लगाया है हर बच्चा सुंदर क्यों होता है अरे भाई वह तनाव से मुक्त होता है, उसके कोमल मन में जो भी आता है, वह खुलकर व्यक्त करता है । सोचता कम है, बस करता है, अतएव आप भी क्यों इतना सोचते हैं । अजी अगर सुबह उठकर मेथी डालकर गुनगुना पानी पीना है तो पीजिए ना, रात में हल्दी का दूध पीकर इम्युनिटी में इज़ाफ़ा करना है तो वह भी कीजिए, शाम को पार्टी में जाने से पहले बाल रंगने हैं तो रंगिए ना । नए कपड़े पहनने का मन है तो देर किस बात की, प्रियजनों के साथ बच्चों की तरह खिलखिला कर हंसना है तो खुलकर हंसिए जनाब। परिवार के साथ नियमित अंतराल में कहीं घूमने अवश्य जाइए, सच मानिये यह एक नई ऊर्जा का संचार करेगा । जीवन रूपी सुंदर उपहार जो परमात्मा ने हमें दिया है, उसका धन्यवाद कीजिए, नुस्खे अवश्य आज़माइए, मगर थोड़े संतुलन में, सबसे बड़ा नुस्खा तो आपकी मुस्कान है । स्वस्थ रहिए, प्रसन्न रहिए एवं सदैव ऊर्जावान रहिए ।

श्रीमती के एन बिंदू
पर्यवेक्षक

बेटी

आसमान काले बादलों से आच्छादित है और हर तरफ अंधेरा छाया हुआ है। बीच-बीच में बिजली खनक रही थी....मौसम बिलकुल भयानक लग रहा था.. क्या मौसम है, सोच ही रही थी कि अचानक इतनी तेज़ बारिश पड़ने लगी मानो किसी पर गुस्सा निकाल रही हो। करने के लिए खास कुछ नहीं था, इसीलए मैंने जाकर किवाड़ बंद कर दिया और कमरे में चली गयी, अपने विचारों में डूबी हुई, मैं लेट गयी और धीरे-धीरे मेरी पलकें मूंद गयी। अचानक ऐसा लगा कि कोई दरवाज़े पर दस्तक दे रहा हो.... फिर सोचा मुझे ऐसा लगा होगा..... थोड़ी देर के लिए ऐसे ही बैठी रही.......फिर वही आवाज ! भला कौन होगा इस समय... मैंने धीरे से दरवाजा खोला और इधर-उधर देखा, उस नौ साल की लड़की का चित्र मैं ज़िन्दगी भर नहीं भूल पाऊंगी, जो आंगन के कोने में बारिश में भीगी थर-थर्राती हुई हाथ जोड़कर मेरे सामने खड़ी थी.... उसके होंठ कांप रहे थे....... मुझे बचा लो... वह मासूम चेहरा आज भी मेरे आंखों के सामने है.....

उसके बाद कितने मौसम आए और गए। समय ने उस पर जादू रचा और बदलते मौसमों के रंगों में रंगी वह भी खिल उठी..... उस दिन बारिश में भीगी उस लडकी को कौन क्यों ऐसे कोई सवालों के बिना उसका हाथ थामकर मैं अंदर ले आयी थी। उसके मासूम चेहरे में किसी का खौफ़ छाया हुआ था... मेरे मन में सौ सवाल थे लेकिन मैंने उससे कुछ भी नहीं पूछा। मुझे लगा पहले उसको दिलासा देना मुनासिब है कि वह मेरे साथ सलामत रहेगी.... कि मैं हमेशा उसकी रक्षा करूंगी। मैने उसको अपनी बेटी जैसा प्यार दिया और साथ दिया। मुझे कुछ पूछने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी, धीरे-धीरे वह खुद अपनी कहानी मुझे सुनायी। उसकी मां की दूसरी शादी के बाद उसके सौतेले पिता ने उस पर बहुत ज़ुल्म किया.... मारपीट तो अलग उसको बुरी नज़र से देखने लगा था..उसकी लाचार माँ सबकुछ जानकर भी कुछ भी नहीं कर पा रही थी.... एक दिन जब उस राक्षस ने उसे मारना शुरू किया, तो उसने अपनी पूरी ताकत इकट्ठा की और उसका विरोध किया, उसके हाथ में लोहे की एक छड़ी लगी, उसी से उस नीच के सिर पर वार किया। उसकी मां ने उसको कहीं भाग जाने के लिए कहा.... डर के मारे वह भागने लगी। उसकी दौड़ इस घर के सामने खत्म हुई थी। मैंने तहे दिल से उसको अपनी बेटी मान ली और उस दिन से वह मेरे घर में मेरी राजकुमारी की तरह रहने लगी।

मैं तो सब कुछ छोड़-छाड़कर, माता-पिता, रिश्तेदारों सभी को चुनौती देकर अपने प्रेमी गिरीष के साथ चल पड़ी थी अपने प्यार की नयी दुनिया बसाने के लिए.... उन्होंने भी इतना प्यार दिया कि मुझे भी किसी चीज़ की कमी महसूस नहीं हुई... थोड़े दिन के लिए सहीं दुनिया भर की खुशियां मेरी कदमों में रख दी और एक दिन अचानक बिना कुछ बोले मुझे अकेली छोड़कर चले गए.... बिलकुल अकेली। कम से कम वे मुझे एक बेटा या बेटी देकर इस दुनिया से चले गए होते तो मैं उसके सहारे जी पाती.... अपनी मन मर्जी से अपने साथी खुद चुनने की वजह से घरवाले भी मुझे पलटकर नहीं देखा। बस मेरे पास उनकी यादों के अलावा जीने का और कोई सहारा नहीं बचा था।

जिन्दगी ऐसे ही कटती जा रही थी। एक पल के लिए ऐसा लगा कि मेरा दुख उनकी आत्मा से देखा नहीं जा रहा था.... वह स्वयं उस लड़की को यहाँ लेकर आए थे.... मैं उसको प्यार से मीनु बुलाती थी... मेरे सुनसान जीवन में वह आशा और प्यार की बात्ती बन कर आयी थी। मेरे जीवन को एक लक्ष्य मिला... मेरी ज़िन्दगी उसकी इर्द-गिर्द घूमने लगी... उसको पाल-पोसकर बड़ा करना... और उसको एक अच्छी जिन्दगी देना... बस इसी विचार में कई बरस बीत गए... और आज मेरी मीनु की शादी थी। मैंने प्यार और आशीर्वाद के साथ उसकी विदाई की थी...।

अपने पति के साथ विदा लेते समय मैं उसकी आँखों में सुरक्षा, आत्मविश्वास और प्यार देख पा रही थी। लेकिन आज यह घर फिर से वीरान हो गया ...इतने सालों बाद मैं फिर से अकेली हो गयी .... एकदम अकेली। मैं उठकर मीनू के कमरे में चली गयी। उसके बिस्तर पर बैठ गयी। बिस्तर पर अब भी उसके कपड़े पड़े थे... धीरे-धीरे में उन कपड़ों को सहलाने लगी। मानो मैं उसकी नरम त्वचा को महसूस करने की कोशिश कर रही थी। मैं मायूस होकर उसके बिस्तर पर लेटकर आँखें मूंदने की कोशिश की... लेकिन लगता है कि नींद भी मुझसे रूठ गयी है। अब मैं किसके सहारे जियूं... किसलिए जियूं.. ज़िन्दा रहने का मकसद ही क्या है ? सोचते-सोचते पता नहीं कब आँख लगी मेरी। सुबह भी उठने का मन नहीं कर रहा था। तन-मन में सुस्ती छा गयी थी। फिर लेटी रही। कब तक ऐसे लेटे रहे... उठकर सामने का दरवाज़ा खोला तो देखा .... मेरी बेटी सामने खड़ी थी...यह कैसा चमत्कार हो गया ?

मुझे अपने आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था... यह कैसे हो सकता है ? साथ में मेरे दामाद भी खड़े थे। वह बिलखकर मुझसे लिपट गयी और रोने लगी... क्यों... क्या हुआ बच्ची ? मैं अपनी जिज्ञासा रोक नहीं पा रही थी। दामाद ने हल्के से मुस्कुराकर कहा कि जब से वह यहां से गयी वह बहुत ही बेचैन थी... न कुछ खाया.. न पिया... सोयी भी नहीं पा रही थी वह। इसलिए सुबह होते ही हम यहां चले आए। मीनू रोती हुई कहने लगी... मैं आपके बिना नहीं जी पाऊंगी... आपको अकेली छोड़कर ज़िंदा नहीं रह पाऊंगी... मुझे यहां से जाने के लिए मत कहना। मुझे कसकर पकड़कर छोटे बच्चों की तरह वह बिलखने लगी। मुझे उसमें फिर से मेरी पुरानी मीनु दिखी। मैंने उसको अपने सीने से लगाकर उसके माथे को चूम लिया। फिर उसके हाथ थाम कर अंदर ले आई। 'अब तुम दोनों को कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है... मैं चाहती हूँ कि तुम दोनों हमेशा यहीं रहो..' भले ही मैंने उसको जन्म नहीं दिया हो लेकिन करम से वह मेरी बेटी ही है। जिस समाज ने मुझे एकाकी जीवन बिताने के लिए मजबूर किया था उसको मैंने अपनी ज़िंदगी से जवाब दिया... मेरी ज़िंदगी को उनके लिए आदर्श बनाने की संतुष्टि और मेरे दोनों बच्चों के प्यार से मेरी दुनिया फिर से हरी-भरी बन गयी।

अनिता दास
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

माता-पिता

मेरे अंदर की करूणा हो तुम,
मेरे मन का भाव हो तुम,
अंतर्मन की चेतना हो तुम,
मेरे हृदय का प्रेम हो तुम,
मेरी मां हो तुम ।।

मेरे अंदर का साहस हो आप,
मेरे शरीर की ताकत हो आप,
मेरे मस्तिष्क की बुद्धि हो आप,
मेरे मन का विश्वास हो आप,
मेरे पिता हो आप ।।

व्यक्तित्व मेरा,
आप दोनों का शिक्षण है ।
अस्तित्व मेरा,
आप दोनों का मिलन है ।

रहना सदा साथ हमारे,
मिले आशीर्वाद सदा तुम्हारे,
आपके दर्शन से, मेरे जगत में होते उजियारे,
मैं हूं नश्वर शरीर, आप हो सनातन आत्मा मेरे ।।

मार्च 2021 को समाप्त वर्ष के लिए राज्य वित्त पर भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन

केरला सरकार - वर्ष 2022 के लिए रिपोर्ट सं. 1 का सार

देश के दक्षिण छोर में स्थित केरला राज्य, तमिलनाडु तथा कर्नाटक के साथ अपनी सीमाएं बाँटता है। भौगोलिक क्षेत्र-वार केरल, 38,863 वर्ग कि.मी. के साथ देश में बाइसवें स्थान पर है। राज्य की आबादी 3.56 करोड़ (देश में 14वां) है और प्रति वर्ग कि.मी. 860 व्यक्तियों की सघनता के साथ देश के पांचवें सघनतम राज्य है। जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 6.05 प्रतिशत है (वर्ष 2011 में 3.35 करोड़ और 2021 में 3.56 करोड़) जो कि भारतीय राज्यों के बीच न्यूनतम दूसरी दर है। केरल की साक्षरता दर (94 प्रतिशत है) भारतीय राज्यों के बीच उच्चतम है। वर्ष 2020- 21 में राज्य का सकल देशी उत्पाद, चालू कीमतों पर ₹7,58,942 करोड़ था।

मार्च, 2021 को समाप्त वर्ष के लिए केरला सरकार के लेखापरीक्षित लेखाओं के आधार पर यह रिपोर्ट राज्य सरकार के वित्तों की विश्लेषणात्मक समीक्षा प्रदान करती है। भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की यह रिपोर्ट, भारत के संविधान के अनुच्छेद 151 के तहत राज्य विधान मण्डल के पटल पर रखने के लिए राज्यपाल को प्रस्तुत करने हेतु तैयार की गयी है। केरला राज्य विधानमण्डल के समक्ष 20 जूलाई 2022 को यह रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी थी।

इस रिपोर्ट में चार अध्याय हैं:

अध्याय I–पर्यवलोकन: इस अध्याय में रिपोर्ट का आधार और अभिगम तथा उसमें अंतर्निहित डाटा का वर्णन हुआ है और सरकारी लेखाओं, बजटीय प्रक्रियाओं, प्रमुख सूचकांकों का समष्टि वित्तीय विश्लेषण और घाटा/ अधिशेष सहित राज्य की वित्तीय स्थिति से संबंधित संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है।

अध्याय II-राज्य के वित्त: यह अध्याय राज्य के वित्तों का विस्तृत परिदृश्य, पिछले वर्ष की तुलना में प्रमुख वित्तीय कुल योग में हुए संकीर्ण परिवर्तन, वर्ष 2016-17 से 2020-21 तक की अवधि के दौरान समग्र प्रवृत्ति का विश्लेषण, राज्य का ऋण प्रोफाईल तथा राज्य के वित्त लेखाओं के आधार पर मुख्य लोक लेखा संव्यवहार आदि प्रदान करता है।

अध्याय III-बजटीय प्रबंधन - यह अध्याय राज्य के विनियोग लेखाओं पर आधारित है और राज्य सरकार के विनियोग तथा आबंटन संबंधी प्रवृत्तियों की समीक्षा करता है और बजटीय प्रबंधन से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों से व्यतिचलनों का बयान करता है।

अध्याय IV-लेखाओं तथा वित्तीय रिपोर्टिंग आचरणों की गुणता– यह अध्याय राज्य सरकार के विभिन्न प्राधिकरणों द्वारा समर्पित लेखाओं की गुणता तथा निर्धारित वित्तीय नियमों एवं विनियमों का राज्य सरकार के विभिन्न विभागीय पदाधिकारियों द्वारा अननुपालन के मुद्दों पर टिप्पणी करता है।

रिपोर्ट में इन निष्कर्षों के समर्थन में विविध स्रोतों से एकत्रित अतिरिक्त डाटा के परिशिष्ट भी समाविष्ट हैं।

लेखापरीक्षा निष्कर्ष

वित्तीय स्थिति

तीन मुख्य वित्तीय मानदण्डों की दृष्टि से राज्य की वित्तीय स्थिति देखी जाती है - वे हैं राजस्व घाटा, वित्तीय घाटा तथा जीएसडीपी में बकाया ऋण का अनुपात।

राज्य के राजस्व घाटे में वर्ष 2016-17 से 2018-19 तक लगातार वृद्धि हुई है और वर्ष 2019-20 में कमी हुई। हालांकि वर्ष 2019-20 के ₹14,495.25 करोड़ से वर्ष 2020-21 में ₹25,829.50 करोड़ तक इसमें ₹11,334.25 करोड़ (78.19 प्रतिशत) की वृद्धि हुई।

राज्य ने वर्ष 2020-21 के दौरान उसके मध्यम-अवधि की वित्तीय योजना में या केरला फिस्कल रिस्पोन्सिबिलिटी एक्ट में निर्धारित कोई भी लक्ष्य प्राप्त नहीं किया है। केएफआर एक्ट, 2003 के अनुसार वित्तीय घाटे के प्रति जीएसडीपी अनुपात को तीन प्रतिशत पर लंगार डाला जाना था, राज्य सरकारी खाते के अनुसार जीएसडीपी के प्रति वित्तीय घाटे का अनुपात वर्ष 2016-17 के 4.17 प्रतिशत से वर्ष 2020-21 में 5.40 प्रतिशत तक बढ़ गया। हालांकि भारत सरकार ने 2 प्रतिशत का अतिरिक्त उधार अनुमत किया था जिससे समग्र उधार बढ़कर 5 प्रतिशत हो गया, जिसके प्रति राज्य ने वर्ष 2020-21 के दौरान जीएसडीपी अनुपात में 5.40 प्रतिशत का वित्तीय घाटा दर्ज किया था। लेखापरीक्षा के पश्चात् विश्लेषण में यह निष्कर्ष निकाला था कि राज्य के राजस्व एवं वित्तीय घाटे में क्रमश: ₹244.85 करोड़ तथा ₹9,471.59 करोड़ की न्यूनोक्ति हुई थी जिससे वर्ष 2020-21 में जीएसडीपी अनुपात के प्रति वित्तीय घाटा 6.65 प्रतिशत तक बढ़ गया।

वर्ष 2016-17 से 2020-21 तक की अवधि के दौरान राज्य का बकाया उधार जीएसडीपी के 29.89 तथा 39.87 प्रतिशत तक की श्रेणी में रहा जोकि केएफआर एक्ट, 2003 के द्वारा निर्धारित जीएसडीपी के 29.67 प्रतिशत के मानदण्ड से लगातार ऊपर रहा था। जीएसटी क्षतिपूर्ति के बदले में भारत सरकार से एक के बाद एक प्राप्त उधार (₹5,766 करोड़) संकेतक को निकालने के लिए उधार के तौर पर माना नहीं गया था।

वर्ष 2020-21 में ऑफ बजट उधार की बकाया देयता सहित राज्य का समग्र उधार ₹3,24,855.06 करोड़ था। राज्य का प्रभावी समग्र उधार ₹3,19,089.06 करोड़ होगा क्योंकि भारत सरकार के व्यय विभाग ने निर्णय लिया था कि उधार प्राप्तियों के अंतर्गत राज्य को एक के बाद एक करके उधार में दिए गए ₹5,766 करोड़ की जीएसटी क्षतिपूर्ति को किसी भी मानदण्ड के लिए जो वित्त आयोग द्वारा निर्धारित किया जा सकता है, राज्य के उधार के रूप में माना नहीं जाएगा।

राज्य के वित्त

पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2020-21 के दौरान राज्य सरकार ने अपनी राजस्व प्राप्तियों में 8.19 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की थी।

राजस्व संसाधन

पिछले पांच वर्ष के दौरान 29.10 प्रतिशत की वृद्धि अभिलेखीकृत करते हुए वर्ष 2016-17 के ₹75,611.72 करोड से वर्ष 2020-21 के ₹97,616.83 करोड़ तक राज्य की राजस्व प्राप्तियां बढ़ गयी है। इस अवधि के दौरान राजस्व प्राप्तियों में राजस्व का मुख्य स्रोत होने वाले राज्य के अपने कर राजस्व में केवल 13.00 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है और राजस्व प्राप्तियों में इसका हिस्सा वर्ष 2016-17 के 55.78 प्रतिशत से वर्ष 2020-21 के 48.82 प्रतिशत में घट गया है जो महामारी की अवधि के दौरान कर राजस्व के अपर्याप्त संग्रहण की ओर इशारा करता है।

राजस्व व्यय

पांच वर्ष की अवधि के दौरान 35.51 प्रतिशत की वृद्धि अभिलेखीकृत करते हुए राज्य का राजस्व व्यय वर्ष 2016-17 के ₹91,096.31 करोड़ से वर्ष 2020-21 में ₹1,23,446.33 करोड़ तक बढ़ा। इस अवधि के दौरान कुल व्यय के प्रतिशतता के रूप में राजस्व व्यय 88 से 92 प्रतिशत के बीच रहा जो कुल व्यय में राजस्व व्यय के वर्चस्व को दर्शाता है। वर्ष 2020-21 के दौरान राजस्व व्यय में प्रतिबद्ध व्यय का शेयर 55.64 प्रतिशत था और इसने वर्ष के दौरान राजस्व प्राप्तियों के 70.37 प्रतिशत का उपभोग किया है और ब्याज भुगतानों ने राजस्व प्राप्तियों के 21.49 प्रतिशत का उपभोग किया है।

व्यय की गुणता

पांच वर्ष की अवधि के दौरान 27.29 प्रतिशत की वृद्धि अभिलेखीकृत करते हुए राज्य का पूंजीगत व्यय वर्ष 2016-17 के ₹10,125.95 करोड़ से वर्ष 2020-21 के ₹12,886.65 करोड़ तक बढ़ा है। राज्य सरकार ने सांविधिक निगमों, सरकारी कंपनियों, अन्य संयुक्त स्टॉक कंपनियों में तथा सहाकारियों में ₹10,064.70 करोड़ का निवेश किया है, पिछले पांच वर्षों में इन निवेशों पर औसत लाभ 1.34 प्रतिशत था जबकि सरकार ने वर्ष 2016-17 से 2020-21 के दौरान अपने उधार पर 7.33 प्रतिशत की औसत ब्याज दर अदा किया है। राज्य सरकार द्वारा दिए गए उधार एवं अग्रिमों पर ब्याज प्राप्तियां, 7.31 प्रतिशत के उधार की औसत लागत के विरुद्ध वर्ष 2020-21 के दौरान बकाया उधार एवं अग्रिमों का 0.23 प्रतिशत रही। वर्ष के दौरान सरकार ने घाटे पर चलने वाली संस्थाओं में ₹315.41 करोड़ और उन संस्थाओं जिनका निवल मूल्य पूरी तरह खत्म हुआ है उनमें ₹146.37 करोड़ का निवेश किया।

आरक्षित निधियां और देयताएं

समेकित ऋण शोधन निधि का गठन, सरकार की बकाया देयताओं के परिशोधन के उद्देश्य के साथ किया गया था लेकिन वर्ष 2020-21 के दौरान सरकार ने इस निधि में कोई योगदान नहीं किया था। उसी प्रकार सरकार को, उसके द्वारा प्रदान की गयी गारंटियों से उत्थित होने वाली भविष्य की देनदारियों को पूरा करने के लिए, संग्रहित गारंटी कमीशनों को जमा करने के लिए एक गारंटी मोचन निधि का गठन करना है। गारंटी मोचन निधि का गठन अभी तक नहीं किया गया है और वर्ष 2016-17 से 2020-21 तक संग्रहित ₹1467.16 करोड़ के गारंटी कमीशन को निधि में जमा भी नहीं किया था। मार्च 2021 के अंत तक स्टेट डिज़ास्टर रिस्पॉन्स फंड (एसडीआरएफ) में ₹646.47

करोड़ का संचित शेष था। भारत सरकार द्वारा जारी मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुसार एसडीआरएफ की संचय राशि का निवेश भारत सरकार की प्रतिभूतियों/ निधि के प्रबंधन हेतु गठित राज्य कार्यकारी समिति द्वारा कोषालय बिलों में किया जाना है। हालांकि ऐसा नहीं किया गया था।

ऋण प्रबंधन

राज्य की कुल वित्तीय देयताओं का मुख्य हिस्सा, खुली बाज़ार ऋण (54 प्रतिशत) था। जीएसटी क्षतिपूर्ति के बदले एक के बाद एक करके दिए गए ₹5,766 करोड़ के अपर्जन पर विचार करते हुए वर्ष 2020-21 के दौरान विकास कार्यकलापों के लिए राज्य के पास उपलब्ध निवल ऋण केवल ₹10,631.94 करोड़ (सार्वजनिक ऋण प्राप्तियों का 16.62 प्रतिशत) था।

ऑफ बजट उधार

वर्ष 2020-21 के दौरान राज्य सरकार ने ₹9,273.24 करोड़ की राशि के ऑफ बजट उधार का सहारा लिया था।

राज्य बजट से बाहर, सरकार के स्वामित्व के या सरकार द्वारा नियंत्रित कंपनियों/ सांविधिक निकायों के माध्यम से उधार के अनुमार्गण करने की वजह से राज्य सरकार द्वारा ऑफ बजट उधार का राज्य के निवल उधार सीमा (एनबीसी) से बच निकलने का प्रभाव होता है। ऐसे उधार राजस्व घाटे को तथा वित्तीय घाटे को प्रभावित करना स्वाभाविक है और अत: ‘दी केरला फिस्कल रिस्पोन्सिबिलिटी एक्ट 2003’ (समय-समय पर यथा संशोधित) के अंतर्गत वित्तीय संकेतकों के लिए निर्धारित लक्ष्यों की उपेक्षा करने का असर होता है। बजट में खुलासा किए बिना ऐसे देयताओं को सृजित करने से दोनों की पारदर्शिता तथा अंतरजन्य औचित्य पर सवाल उठाते हैं।

ये ऑफ बजट उधार राज्य सरकार की देनदारियों को बढ़ाएगा और समय के साथ कर्ज़ के जाल में फंसाएगा। चूंकि इन उधारों का खुलासा बजट में नहीं किया जाता विधान सभा ऐसी देनदारियों से अंजान है।

ऋण स्थिरता

राज्य के जीएसडीपी के पक्ष में लोक ऋण का अनुपात 2019-20 के 20.43 प्रतिशत से 2020-21 में 27.07 प्रतिशत (एक के पीछे एक वाले उधार के अपवर्जन पर विचार करते हुए प्रभावी वृद्धि 26.31 प्रतिशत है) तक बढ़ गया है। उसी प्रकार, राज्य की कुल राजस्व प्राप्तियों के लिए ब्याज भुगतान का अनुपात 2019-20 के 21.30 प्रतिशत से 2020-21 में 21.49 प्रतिशत तक बढ़ गया है।

बजटीय प्रबंधन

कुल अनुदानों /विनियोग तथा उपगत व्यय के बीच के अंतर के कारण हुई बचत जो विभिन्न सरकारी स्तरों पर बजट अनुमान की गलत संवीक्षा और कमज़ोर बजट प्रबंधन की ओर इशारा करती है।

उन मामलों जहां अंतिम व्यय या तो मूल अनुदान के स्तर तक नहीं पहूंचा या अनुदानों के लिए अनुपूरक मांग प्राप्त करने के बावजूद कोई व्यय नहीं हुआ,मेंअनुपूरक अनुदानों के लिए मांग

विभागीय अधिकारियों की तरफ से निधियों की यथार्थ आवश्यकता को निर्धारित करने में हुई ढिलाई को दर्शाती है।

अतिरिक्त, अनावश्यक या अपर्याप्त पुनर्विनियोजन, विभागीय अधिकारियों द्वारा उनके नियंत्रणाधीन लेखा शीर्षों में निधि की यथार्थ आवश्यकता को निर्धारित करने में हुई विफलता को सूचित करता है।

नियमितीकरण अपेक्षित अतिरिक्त व्यय, अपर्याप्त व्यय नियंत्रण को सूचित करता है।

लेखाओं तथा वित्तीय रिपोर्टिंग आचरणों की गुणता

राज्य की समेकित निधि में उप कर/रॉयल्टी/निधि को जमा नहीं किए जाने की प्रवृत्ति लगातार रूप से विद्यमान थी।

नियामकों द्वारा राज्य के लोक लेखे के बाहर ‘निधि’ (दी केरला स्टेट इलेक्ट्रिसिटी रेगुलेटरी कमीशन की निधियां) अनुरक्षित करने के मामले थे।

महालेखाकार (ले व ह) द्वारा ₹22.44 करोड़ के लिए 12 उपयोग प्रमाण-पत्र प्राप्त नहीं किए गए थे।

पीडी खातों के साथ गैर-समाधान, लोक निधि के दुरुपयोग के जोखिम से भरपूर है।

स्वायत्त निकायों (23 संख्या के) को वार्षिक लेखे, नि.म.ले.प को देना था। लेखाओं को प्रस्तुत करने में बकाया एक से सात वर्षों के बीच रहा।

दुर्विनियोजन/ लोक धन की हानि के मामलों के संबंध में विभागीय कार्रवाई की पहल करना, देयता निपटाना, वसूली आदेश जारी करना आदि में विलंब हुआ था।

मंडला आर्ट में बनाई गई कलाकृतियाँ

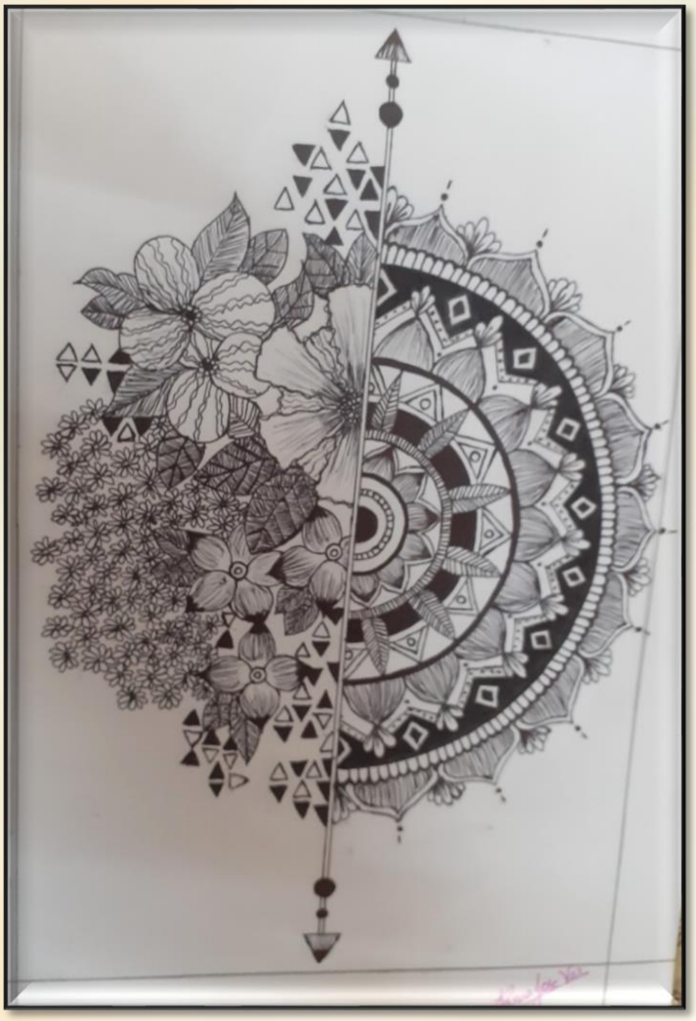

रैना जोस वाज़
सुपुत्री मेरी जया जोस,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैथिली जे आर
सुपुत्री राखी पी ओ,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

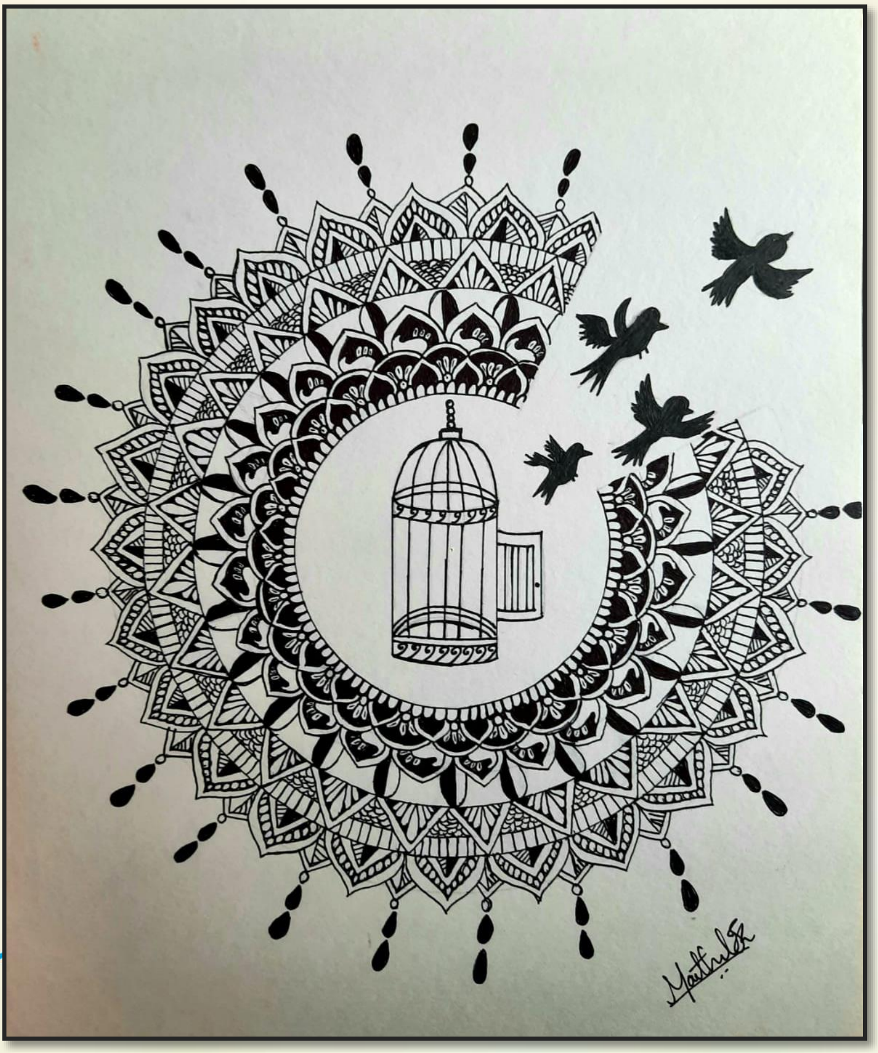

कार्यालयीन कर्मचारियों के बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग

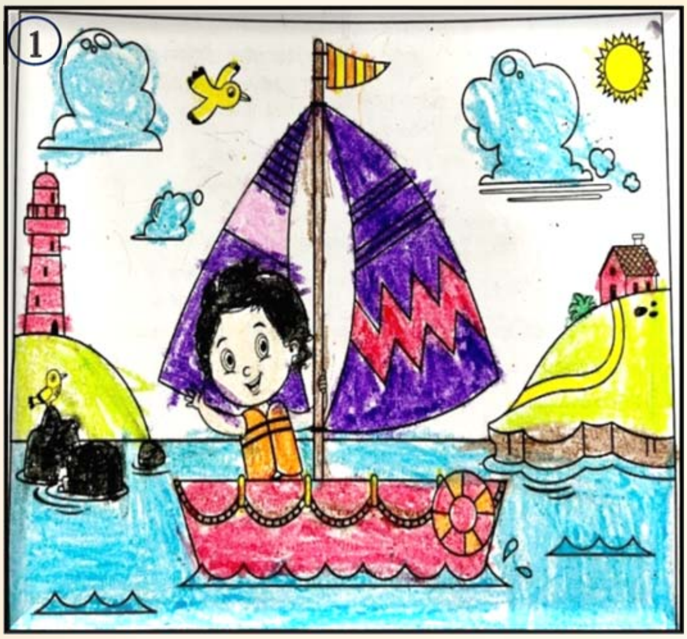

आदव बिजुकुमार
(कक्षा 1)
सुपुत्र सौम्या पी वी,
वरि. लेखापरीक्षक

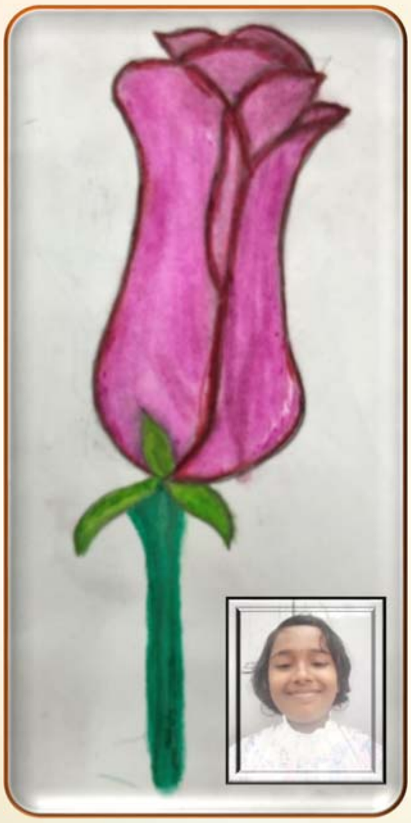

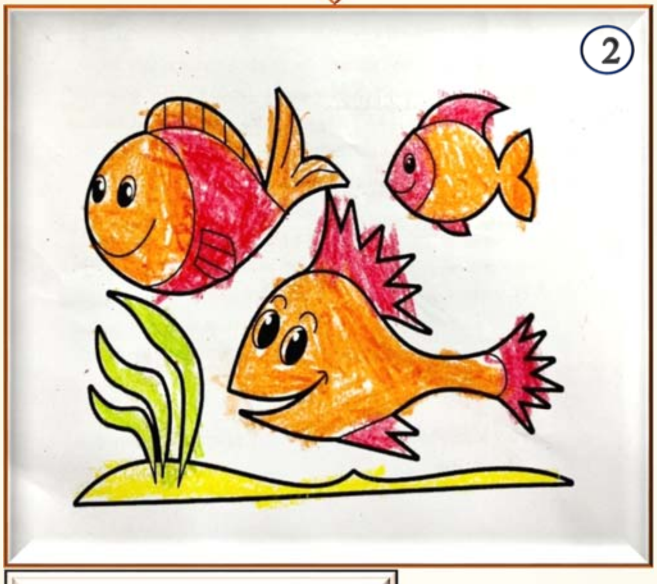

अभिना अनीष
(कक्षा 4)
सुपुत्री जास्मीन,
लेखापरीक्षक

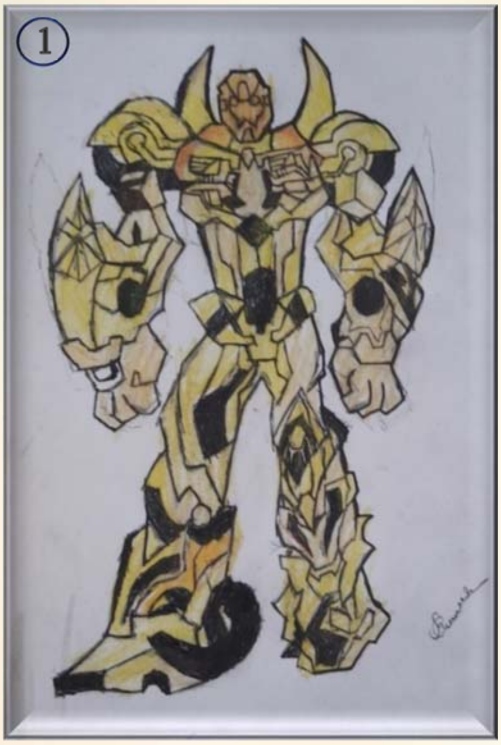
①

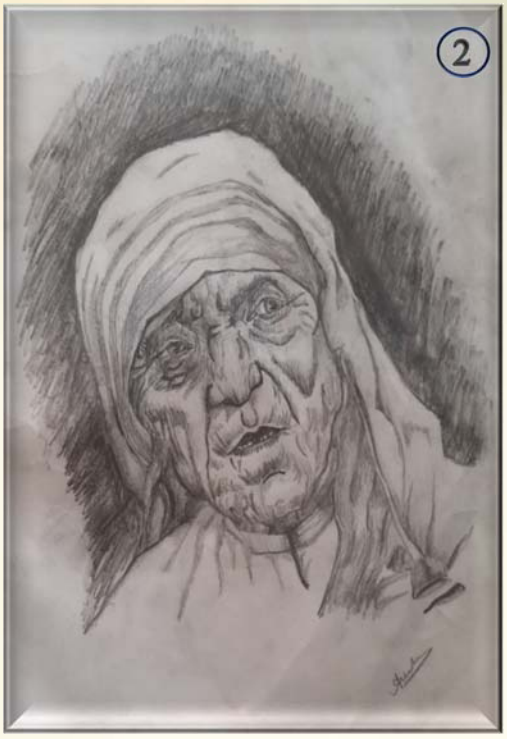
②

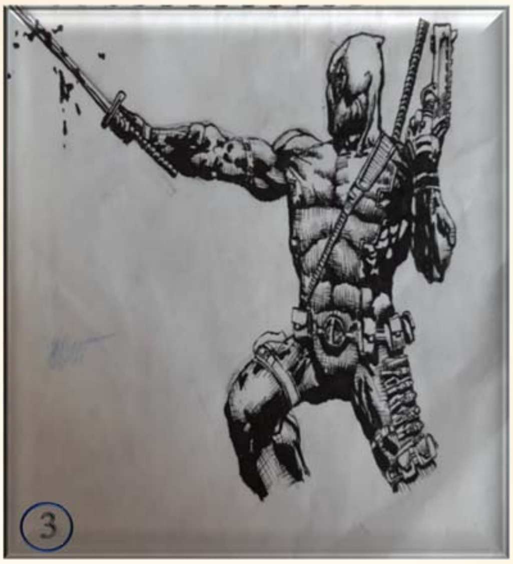
③

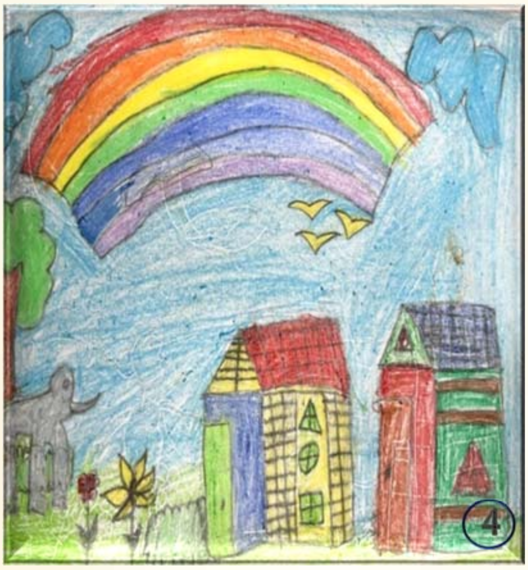
④

अदित्य लोहमोड,
(कक्षा 8)
सुपुत्र कृष्ण कुमार,
स.ले.प.अ.

अलवीना ज़हरा (कक्षा 3)
सुपुत्री सादत हुसैन रिज़वी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

1 2 3

4

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,
केरल, तिरुवनंतपुरम